॥ श्रीः ॥
आतशी नाग
नाटक

1988 | 401

24.5.88

B | 1+ | 60 old

॥ श्री ॥

अंग्रेजी के

एक दिलचस्प नावेल

का प्लाट

आतशी नाग।

बम्बई की पारसी नाटक कम्पनीयों का मशहूर खेल

जिसे

उपन्यास बहार आफिस, काशी. बनारस के अध्यक्ष स्वर्गीय बाबू जयरामदास गुप्त ने नाटक प्रेमियों के विनोदार्थ बहुत व्यय और परिश्रम के उपरांत अपने मित्र मुंशी जलाल अहमद शाद, लेट आथर दि टाइग्स थियेट्रिकल कम्पनी आफ कलकता, वर्तमान आथर दि न्यू पारसी थियेट्रिकल कम्पनी आफ बम्बई से पाकर नागरी अक्षरों में सम्पदित किया और बाबू शिवराम दास गुप्त ने प्रकाशित किया।

काशी।

बी. एल पावगी द्वारा

हितचिन्तक प्रेस, रामघाट, में मुद्रित।

प्रथमबार] मई सन् १९१९ [मूल्य [illegible]

अश्खास नाटक।

मर्द।

मलिकुल आदिल–रशिया का रहमदिल बादशाह।
सैफ़–वलिहद सल्तनत।
बुल हवस } बेरहम खूनी सैफ़ के दोस्त।
खुद गरज } ,, ,,
ताहिर–शाहमलिकुल आदिल का वफादार किलादार।
मीर्जा झक्की–तन्नाज नं० १ का वहमी शौहर।
मश्गूल–तन्नाज नं० २ का आशिक।
बब्बन–मिर्जा झक्की का बेवकूफ़ नौकर।
फक्कड़–मश्गूल का चलतापुर्जा नौकर और अजीब का आशिक।
सईद–ताहिर का लड़का।
मजहर–खूनी सैफ़ का सौतेला भाई।

औरत

मल्काआमरा–सैफ की सौतेली माँ।
जाफिजाँ–ताहिर की शरीफ बीबी।
सईदा–ताहिर की मासूम लड़की।
तन्नाज नं० १–मिर्जाझक्की की नौजवान बीबी।
तन्नाज नं० २–मश्गूल की माशूका।
अजीब–तन्नाज नं० २ की खादिमा-फक्कड़ की माशूका।
नवेली–मिर्जाझक्की की मुलाजिमा।
दरबारी, सिपाही, नोकर रामिशगर, सहेलियाँ वगैरह।

आतशी नाग ।

अंक पहिला ।   सीन पहिला ।

(सहेलियों का हम्दे ख़ुदा में मशगूल दिखाई देना ।)

गाना ।

सहेलियां—ऐ मालिक तू निराली तेरी जात आलम है तुझमें ।
ऐ बारी सुन ये धुन ले दे दाद आजिज़ की ॥ ऐ०—
तुझसे जग गिज़ा पाये राज़िक है तोरी शान ।
तेरो ही नाम है, लौहे कलम पै महेशर के ॥ ऐ०—

अंक पहिला ।   सीन दूसरा ।

तहख़ाना ।

(मुक़य्यद सैफ़ का मय दो खुशामदी दोस्तों के हाथ में गिलास लिये नज़र आना ।)

सैफ़—शराब रौशन है जाम में, या सुरूर इसमें टहल रहा है ।
स्याही मायल है सुर्ख़ रंगत, चिराग़ पानी में जल रहा है ॥
हबाब उठते हैं छोटे छोटे, खुमार करवट बदल रहा है ।
गिलास है दायरा ज़मीं का, यह उसमें सूरज निकल रहा है ॥
दहन है तिश्ना नज़र है बेकल, जिगर को खुफक़ान हो रहा है ।
हवा से जागेगा नशा इसका, अभी तो बेफ़िक्र सो रहा है ॥

मेरे मुअज्ज़ज़ दोस्तो ! लो और पीओ। यों तो बारहा आप लोगों की तशरीफ़ आवरी का इत्तफ़ाक होता रहा है; मगर आज की पुरलुत्फ़ दावत में मैं दोनों दोस्तों को वह हुस्न की बोलती हुई ज़िन्दा तस्वीरें दिखाऊंगा, जिनकी जादूभरी निगाहों पर, मतवाली अदाओं पर, बाग़े जन्नत की हूर भी रश्क करती हैं और दुनिया के हर एक वसीह तबके की नाज़नीन हसीन परियां मारे शर्म के परदों में मुंह छिपाती फिरती हैं।

ख़ुदग़रज़–मुअज़्ज़ज़ दोस्त, जिन आला तस्वीरों को बना कर मानिओ बेहज़ाद ने दुनिया में शोहरत पैदा की थी; कहीं उन्हीं तस्वीरों में तो आपने अपनी जादूगरी से रूह नहीं फूंक दी है ?

सैफ़–नहीं; नहीं। दस बरस की मुक़य्यद मुद्दत में अपने आराम के लिये जो कुछ इस चहारदीवारी के मकान में रह कर कोशिश की है, उसीका नतीजा है कि गोशये तनहाई के लिये हसीनों की एक ख़ूबसूरत दिलबहलाव जमात तैयार हुई है:–

दराज़ काकुल, निगाहें क़ातिल, उभरता जोबन, नई जवानी।
निराले ग़मज़े, निराली बातें, हर एक गोरी हर एक मोहानी॥
बला के क़द हैं, बला की शोखी, बला की रफ़्तार आसमानी।
कोई है चंचल तो कोई है भोली, फिर उसपे गानों में ख़ुशलहानी॥
अदायें देखो तो उफ़ ज़ालिम, जो हुस्न देखो तो वाय अल्ला।
जो ज़ाहिद मसज़िद में देख पाये, पुकारे अल्लाह हाय अल्लाह॥

बुलहवस–ओफ़, बला का सकता। यह मुझको क्या हो गया? नहीं मालूम, हसीन परियां कब नज़र पड़ेंगी। मेरी तो सिर्फ़ तारीफ़ ही सुन सुन कर तबियत जामे से बाहर हो गई।

ख़ुदग़रज़–भला हुज़ूर! वह हसीनों की जमात है कहां ?

सैफ़-राहत महल में ।

बुलहवस-अच्छा तो हुक्म फ़रमाइये ; ज़रा ख़ादिमों के सामने तो बुलवाइये ।

सैफ़-जब वक्त होगा तो खुद घंटी बजेगी और नज़्बी के लिये खुशगुलू आवाज़ों की बंसरी अपने आप दिलों को लुभायेगी ।

खुदगरज़-तो क्या घंटी बजने का वक्त अभी दूर है ?

सैफ़-नहीं ; नज़दीक है ।

(घंटी का बजना और गाने की आवाज़ का आना)

ए ए ए ए ए जोबन आया उमंग पर प्यारियां ।

बुलहवस-हः हः हः, नहीं मालूम इस चहारदीवारी के उस तरफ़ गैबी आवाज़ों में किस बला का मिसमेरेज़िम भरा हुआ है । ज़मज़मा सराई क्या हो रही है गोया क़ुदरती इल्हाम है, जो अपने मिक़नातिसी असर से दिलों को लुभा रहा है ।

(दोनों का अंदर जाने का क़स्द करना)

सैफ़-गुस्ताख़ न हो; थोड़ी देर और ठहरो ।

ख़ुदगरज़-ठहरो । किस लिये ?

सैफ़-इस लिये कि दूसरी घंटी नाफिज़ हुक्म की अभी नहीं बजी है ।

बुलहवस-तो ऐसी कितनी घंटियाँ बजेंगी ?

सैफ़-इत्तलाई पहिली घंटी बज चुकी ; दूसरी पर चलने की इज़ाज़त होगी और तीसरी पर हरेक गुलबदन, परी चेहरा, खुशगुलू नाज़नीन ज़र्क बर्क पौशाक में हमारे रूबरू बादस्ता खड़ी होगी । (दूसरी घंटी का बजना)

खुदगरज़-यह लीजिये, दूसरी घंटी भी बजी ।

मेरे मुअज्ज़ज़ दोस्तों ! लो और पीओ। यों तो बारहा आप लोगों की तशरीफ आवरी का इत्तफाक होता रहा है; मगर आज की पुरलुत्फ़ दावत में मैं दोनों दोस्तों को वह हुस्न की बोलती हुई जिन्दा तस्वीरें दिखाऊंगा, जिनकी जादूभरी निगाहों पर, मतवाली अदाओं पर, बाग़े जन्नत की हूरें भी रश्क करती हैं और दुनिया के हर एक वसीह तबके की नाज़ुनीन हसीन परियां मारे शर्म के परदों में मुह छिपाती फिरती है।

ख़ुदग़रज़—मुअज़्ज़ज दोस्त, जिन आला तस्वीरों को बना कर मानिओ बहँज़ाद ने दुनिया में शोहरत पैदा की थी: कहीं उन्हीं तस्वीरों में तो आपने अपनी जादूगरी से रूह नहीं फूंक दी है ?

सैफ़—नहीं; नहीं। दस बरस की मुक़य्यद मुद्दत में अपने आराम के लिये जो कुछ इस चहारदीवारी के मकान में रह कर कोशिश की है, उसीका नतीज़ा है कि गोशये तनहाई के लिये हसीनों की एक ख़ूबसूरत दिलबहलाव जमात तैयार हुई है:—

दराज़ काकुल, निगाहें क़ातिल, उभरता जोबन, नई जवानी।
निराले ग़मज़े, निराली बातें, हर एक गोरी हर एक मोहानी॥
बला के क़द हैं, बला की शोख़ी, बला की रफ्तार आसमानी।
कोई है चंचल तो कोई है भोली, फिर उसपे गानों में खुशलहानी॥
अदायें देखो तो उफ़ ज़ालिम, जो हुस्न देखो तो वाय अल्ला।
जो ज़ाहिद मसज़िद में देख पाये, पुकारे अल्लाह हाय अल्लाह॥

बुलहवस—ओफ़, बला का सकता। यह मुझको क्या हो गया? नहीं मालूम, हसीन परियां कब नज़र पड़ेंगी। मेरी तो सिर्फ तारीफ ही सुन सुन कर तबियत जामे से बाहर हो गई।

ख़ुदग़रज़—भला हुज़ूर! वह हसीनों का जमात है कहां?

सैफ़-राहत महल में।

बुलहवस-अच्छा तो हुक्म फ़रमाइये; ज़रा खादिमों के सामने तो बुलवाइये।

सैफ़-जब वक्त होगा तो खुद घंटी बजेगी और नज़्बी के लिये खुशगुलू आवाज़ों की बंसरी अपने आप दिलों को लुभायेगी।

खुदग़रज़-तो क्या घंटी बजने का वक्त अभी दूर है ?

सैफ़-नहीं; नज़दीक है।

(घंटी का बजना और गाने की आवाज का आना)

ए ए ए ए ए जोबन आया उमंग पर प्यारियां।

बुलहवस-हः हः हः, नहीं मालूम इस चहारदीवारी के उस तरफ़ ग़ैबी आवाज़ों में किस बला का मिसमेरेजिम भरा हुआ है। ज़मज़मा सराई क्या हो रही है गोया कुदरती इल्हाम है, जो अपने मिक़नातिसी असर से दिलों को लुभा रहा है।

(दोनों का अंदर जाने का क़स्द करना)

सैफ़-गुस्ताख़ न हो; थोड़ी देर और ठहरो।

खुदग़रज़-ठहरो। किस लिये ?

सैफ़-इस लिये कि दूसरी घंटी नाफ़िज हुक्म की अभी नहीं बजी है।

बुलहवस-तो ऐसी कितनी घंटियाँ बजेंगी ?

सैफ़-इत्तलाई पहिली घंटी बज चुकी; दूसरी पर चलने की इजाज़त होगी और तीसरी पर हरेक गुलबदन, परी चेहरा, खुशगुलू नाज़नीन ज़र्क़ वर्क़ पौशाक में हमारे रूबरू बाबस्ता खड़ी होगी। (दूसरी घंटी का बजना)

खुदग़रज़-यह लीजिये, दूसरी घंटी भी बजी।

(तीसरी घंटी का बजना)

बुलहवस - और यह लीजिये, तीसरी भी हो चुकी ।

(हसीनों का एक जमाअत बनकर नज़ाकत के साथ गाते हुए दाखिल होना)

गाना ।

हसीनान - है जोबन आया उमंग पर प्यारियां ।
है प्यासी सय्यां के दर्शन की सखियां, हम वारी जायें सारियां
दीदार का है लुत्फ यहां जशने आम है ।
जोबन चमक रहा है, मै लाला फाम है ॥
उतरा है नूर खल्क में इस सर ज़मीन पर ।
दीवारो दर फिदाई हैं मूसा का बाम है ॥
आई गुलशन में मस्ती बहार की ।
हैं प्यासी किसी के ये दीदार की ।
मिल के फूलों में खुशबू निसार की ॥
शादी है सुबहोशाम, जश्न है यां मुदाम ।
रिझाओ लुभाओ परियां तमाम ॥
हैं मस्त बेखुदी का चला है जहां में दौर ।
आँखों में है सुरूर, तो हाथों में जाम है ॥
परियां खड़ी हुई हैं तो हूरे हैं मुन्तजिर ।
उसके लिये कि जिसका यहां सैफ नाम है ॥
नाचो री खेलो री छलबल मचाओ री ।
दिलमें है शादां हम सभी सदके हैं जान हज़ारकी॥ है जो०

ख़ुदग़रज़—आ हा हा हा, ख़ुदा ने दुनिया भर का हुस्न इन्हीं परीज़ादों को बख्शा है ।

बुलहवस—हूरों का हुस्न इनके आगे पानी भरता है ।

सैफ़-लगे सीने से एक आकर, मिलाये दूसरी लब को ।
बगल में बैठ एक आकर, गवा तू जानमन सब को ॥

(दो लड़कियों का गाना)

गाना ।

बलम कजरौटी लैहो कि नैन बिगड़े जांय ।
सुरमा लैहो मिस्सी लैहो दर्पन बिना जिया जाय ॥ बलम०-
छोटी ननदिया सुरमा लगाये मिस्सी लगाये मुसकाय ।
नैनों मे नैना मिलाये जेठनियां कि मोरा भी मन ललचाय ।
कि हाय हाय, मोरा भी मन ललचाय ॥ कि०-
तन मन धन वाला जोबन वारी उमरिया जान ।
कि हाय हाय, वारी उमरिया जान ॥ कि हाय हाय वारी०-
बलम कजरौटी लैहो०-

(किलेदार ताहिर का आना और देखकर हैरान होना; हसीनान का जाना)

ताहिर—माशाअल्लाह ! नजर कैद होकर भी बुरी रास्तों को अभी तक तर्क नहीं किया । दानाई और तकाज़ाये ग़ैरत ने हनोज़ शर्मो हया का सबक़ नहीं सिखलाया ?

सैफ़—शहर की सैरो तफ़रीह से दूर करके हमें क़िले में असीर किया । अब यहां पर अपने दिल बहलाने का कुछ सामान कर लिया तो वह भी तुम लोगोंसे देखा नहीं जाता ।

ताहिर—आप को बग़ैर शाही फ़रमान के ऐसा हौसला कभी हो नहीं सकता ।

सैफ़—तो क्या तुम लोगों ने मुझे बिलकुल ही बेकार समझ रक्खा है ?

ताहिर—इसमें शकही क्या है ?

सैफ़—ओफ, तू मुझे अज़हद ज़लील कर रहा है ।

ताहिर—जी नहीं; शाह का नमकहलाल नौकर आप की बुरी खसलतों पर लानत कर रहा है। फरमाइये, क्या आपने पुराने वज़ीर के ज़नानखाने में पहुंच कर उनकी पारसा लड़की पर गुस्ताखाना हमला नहीं किया?

सैफ़—किया तो क्या हुआ? क्या मैं शाहज़ादा नहीं था?

ताहिर-शाहज़ादे थे तो शरीफाने तरीके से पैग़ाम भेजना था, न कि हराम नज़रें लेकर एक लायक़ मकान में जाना था।

सैफ़-जो कुछ मैंने किया अच्छा किया।

ताहिर-जी, अच्छा नहीं; बल्कि बुरा किया।

सैफ़-फिर अब आप क्या चाहते हैं?

ताहिर—कुछ नहीं। सिर्फ यह चाहता हूं कि इन बुरे तरीकों को छोड़ दो, जो इस वक्त कर रहे हो।

सैफ़—वर्ना?

ताहिर—वर्ना ऐसा न हो कि जो हालत अब है, उससे भी बदतर हो जाये।

सैफ़-क्या तुम सब मिल कर मुझ पर सख्तियां गुजारोगे?

ताहिर-अगर रियाया कि बहू-बेटियों का इसी तरह मजमा रहेगा, जो आज दिन है, तो ज़रूर एक दिन ऐसा भी आ जायगा।

सैफ़-मेरे मुअज्ज़ज़ दोस्तो, गिरफ्तार करलो इस बेईमान को:-

मुखिल हो बीच में आकर जो बज्में शादमानी का।
मजा चखना उसे लाज़िम है तेग़ अस्फ़हानी का॥

ताहिर—(पिस्तौल का फ़ैर करना) खबरदार! आगे न बढ़ना ज़ीनहार। (ताहिर का जाना)

सैफ़—ओफ़, घात रह गयी, बात बिगड़ गयी, तदबीर का तीर न लगा; दुश्मन असीर न हुआ।

दोनों — बुरा हुआ।

सैफ़—फिर अब बुराई का क्या होना चाहिये बदला?

खुदग़रज़—सामाने जंग, क़त्लो खून का ढंग। मजबूरी से ज़िंदगी न गुज़ारिये। ज़ालिम लोग दबाव डाल रहे हैं, इन के दबाव में न आइये।

सैफ़—बेशक, जिन लोगों ने मेरी जिन्दगी वबाले जान कर रक्खी है, उनसे मुकाबला ही करना चाहिये। मारें या मरें, बहर सूरत आज़ादी के लिये यहां से क़िला तोड़कर बाहर निकल जाना चाहिये। मगर हां, इस क़दर जुरअत करने के लिये मेरा मददग़ार?

खुदगरज़—आपके मददगार हम हैं।

बुलहवस—घबराइये नहीं, शाह ज़ईफ है, रियाया बेवकूफ है, मौका अच्छा है। दरबारियों को बस में कर लेंगे, फौज़ों पर कब्ज़ा जमा लेंगे। बख्त यावर है, तो आन की आन में आप बाद-शाह और हम (दोनों का एक साथ बोलना) आपके वज़ीर।

सैफ़—लेकिन सल्तनत छीन लेने के लिये बुज़ुर्ग वालिद के खिलाफ सरज़मी से जब बलवे की ठहरेगी, तो क्या तुम कह सकते हो कि इसमें हमें कुछ भी मुसीबत पेश न आयेगी।

खुदग़रज़—आयेगी और ज़रूर आयेगी। मगर ज़रा ग़ौर कीजिये। जो लोग रात दिन दरिया के सफ़र करते हैं, तो क्या उनको हमेशा सीधे ही रुख़ की हवा मिला करती है? समुंदर हर वक्त सोता और ठहरा हुआ ही मिला करता है? नहीं; बल्कि कभी तूफान, कभी मौजों की तुगयानी, कभी बारिश, कभी बादे मुखालिफ और बाज वक्त तो उनका रास्ता तक बंद हो जाता है। लेकिन जाने वाले कहीं खौफ खाया करते हैं? चलते हैं, ठहरते हैं, लंगर डालते हैं, हज़ारों तरकीबें लड़ाकर बहेर सूरत

किनारे पर पहुँच जाते हैं।

बुलहवस–सच कहते हो। कोशिश करने वाले हमेशा जीत जाते हैं।

सैफ़–तो मालूम हुआ कि इस इरादे में कामयाब होने के लिये हमको मुसीबतें तो ज़रूर पेश आयेंगी। मगर हिकमत और ताक़त से टाल देंगे और आसानी के साथ मंज़िले मक़सूद पर पहुंच जायंगे। अब कहो, तुम्हारा क्या इरादा है?

दोनों–इरादा वही है, जो हुज़ूरने मुसम्मम कर लिया है।

सैफ़–अच्छा तो निकालो म्यान से खंजर।

इरादे के बनो बंदे सितम के तीर बन जाओ।
जमा दो पांव वादे पर, बनो बादल बरस जाओ॥
न समझो किला फ़ौलादी, न तंग आओ न घबराओ।
उड़ा दो दुश्मनों की धज्जियां बाहर निकल जाओ॥
घड़ी भर में हमारी ख़ाक को भी मनूज़लत होगी।
जो निकले आज, कल कब्ज़े में सारी सल्तनत होगी॥

(तीनों का दरवाजा तोड़ने के लिये बढ़ना, मुहाफ़िज़ों का रोकना; सैफ़ का सब को मार और क़िला तोड़कर निकल जाना।)

अंक पहिला। सीन दूसरा।

मिर्जा झक्की का मकान।

(मिर्ज़ा झक्की का सोंटा लिये हुए आना)

मिर्जा झक्की–खुशनसीब कौन? बीबीवाला। और बदनसीब कौन? वह भी बीबीवाला। बीबी ससुराल से नेक आई, तो दुनिया की नेमत हाथ आई। और अगर सड़ियल, चिड़चिड़ी, अल्लामा से मुडभेड़ हुई तो इज्ज़त टके सेर हुई। दुनिया में कोई शराबख़ोर

है, कोई कबाबखोर है, कोई हरामखोर है, कोई हलालखोर है, मगर मैं जोरूखोर हूं। यानी हर दूसरे तीसरे साल एक नई शादी करता हूं। और शादी के हर दूसरे तीसरे महीने बीबी को जन्नत में झाड़ू देने के लिये दुनिया से रवाना करता हूं। चुनांचे आप लोगों की दुआ की बरकत से सात शादियां कीं, और सातों को हज़म कर चुका हूं। मगर आठवीं सक़ीलगिज़ा की तरह बचती रही। कमबख्त ने नाक में दम कर रखा है: पहिले रोज़ आई और कहने लगी मियां आज मेरे चचा के लड़के की शादी है, मुझे वहां जाना है। मैंने कहा, अच्छा जाओ। लीजिये, वह चली नखरे से। जब दूसरा दिन हुआ फिर वैसी की वैसी मौजूद है। मैंने कहा, क्यों क्या है; कहने लगी मियां आज मेरे भाई के यहां लड़का पैदा हुआ है, इस-लिये उसको देखने जाना है। मैंने कहा अच्छा जाओ; लीजिये वह चली मटकती हुई। अरे यारो! कैसा चचा और कैसा भाई। जब उसने देखा कि मुझ उल्लू की पट्ठी को मियां भी उल्लू का पट्ठा मिल गया है, तो बेधड़क होकर खुल खिली और हर रोज़ नये नये बहाने गढ़कर अपने पुराने आशिकों से मिलना शुरू कर दिया। अफ़सोस, अगर मैंने पहले रोज़ ही से काबू में रक्खा होता, उठते लात और बैठते जूता रशीद किया होता, तो आज के रोज़ हाथ में सोंटा लेकर यह पहरा देने की नौबत न आती। (घर की तरफ मुंह करके आवाज देना) तन्नाज़! ओ तन्नाज़!! हैं, जवाब नदारत। कहीं चल तो नहीं दी? अरी तन्नाज़! ओ तन्नाज़! हत्त तुझे ख़ुदा रांड करे। बच्चा, मालूम होता है फरार हो गई। नवेली, ओ नवेली।

नवेली–जी जी जी।

मिर्ज़ा झक्की–लो, यह टूटी हुई नफीरी भी सुर में बोलती हुई

आती है ? (नवेली का आना) वह कहां है ?

नवेली–कौन वह ?

मिर्ज़ा झक्की–अरे वही, मेरे ससुर की बेटी, मेरे बेटे की मां, मेरे मां की बहू, मेरे बहू की सास। समझी ख़ब्तुलहवास ?

नवेली–आप अपनी बीबी को पूछते हैं ?

मिर्ज़ा झक्की–और नहीं तो क्या अपनी अम्मां का हाल दरियाफ्त करता हूं।

नवेली–हुज़ूर, वह तो बहुत देर हुई पिछले दरवाज़े से बाज़ार को गई।

मिर्ज़ा झक्की–यह लीजिये, मैं अगले दरवाज़े पर पहरा देने लगा तो वह पिछले दरवाज़े से गायब। हत्त तेरी औरत की ऐसी तैसी। भला यह तो बोल, वह किस तरह से गई ?

नवेली। क्या मतलब ?

मिर्ज़ा झक्की–मेरा मतलब यह है कि सीधे–सादे लिबास में गई है या बन संवर के ?

नवेली–बड़े ठाट–बाट के साथ।

मिर्ज़ा झक्की–ठाट ! तो बस उल्ट गया टाट, कर दिया उसने मियां का बायकाट। बक, आगे बक।

नवेली–क्या बकूं ?

मिर्ज़ा झक्की–साड़ी किस रंगकी थी ?

नवेली–गुलनार।

मिर्ज़ा झक्की–कान और गले में ?

नवेली–करणफूल और हार।

मिर्ज़ा झक्की–और क्या क्या पहिन कर गई ?

नवेली–सर पर बनारसी दुपट्टा, रेशमी जाकिट, गले में मोहनमाला,' हाथों में कंगन, सोने की पहुँची ; पैरों में पाजेब।

मिर्जा झक्की-अररररर, इतना ज़ेवर? तो गोया पंजाब नेशनल बंक का करन्सी नोट बन कर गई है।

नवेली-हां जी हां, सब कुछ पहिन कर गई है।

मिर्जा झक्की-बस हो चुका, खातमा हो चुका। बन ठन कर, बन सँवर कर नखरे टस्से मे गई है, जब तो जरूर किसी आड़ की जगह में बैठकर किसी आशिक के साथ चुम्मा-चाटी हो रही होगी; मियां का माल आशिकों में तबर्रुख़ की तरह बट रहा होगा। मगर सब्र, बच्चा मिर्जा! चार गज़ की ओढ़नी और दस गज़ के दुपट्टा से मुकाबला कर, जाकेट पतलून के बखिए उधेड़: औरत ज़ात और मर्द से चाल चले! नवेली जा, दौड़कर जा, फौरन किसी मकान बनाने वाले राजगीर को बुला ला। पिछला दरवाजा एक दम बन्द करा दे। ईटों से नहीं; बल्कि पत्थरों से चुनवा दे। मगर नहीं, ज़रा ठहर; किराये के मकान में रहना और फिर अपना पैसा खर्च करना? बस, कुछ नहीं: जितने बीबी वाले हैं, उनको दो दरवाजे वाले मकान में रहना ही नहीं चाहिये। बस, मैं कलही इस मकान को बदल दूँगा। अच्छा, जा तू चूल्हे के साथ मुंह झुलस, मैं बाजार जाता हूं और उसे तलाश करके जुतियाता हुआ वापस लाता हूं।

(मिर्जा झक्की का बाहर जाना, तन्नाज नं० २ और मजहूल का गाते हुए आना)

गाना।

तन्नाज़ नं० २-कैसी जुल्फें निराली मेरी आँखें हैं जादू भरी,
लाखों के दिल को लोभाऊंगी। कैसी०-
आई आई हुस्न में बहार,
तेज छुरी अबरू की कटार,

गात गोरी है गोरे हैं दोनों यह रुख,
इनको ज़ालिम निगाहों से बचाऊंगी॥ कैसी०-

मजहूल-प्यारी तश्राज़! मुझे बहुत ज़रूरी काम के लिये जाना है और फिर बहुत जल्द तुम्हारे पास वापस आना है। इस लिये जल्द मामू के घर पहुँच जाओ और मुझे जाने की इज़ाज़त दो।

तश्राज़ नं० २-अच्छा जाने के पेश्तर, जो आपने अपनी तसवीर देने का वादा किया था, वह तो देते जाओ।

मजहूल-जानमन, खुशी से। (तस्वीर देना)

तश्राज़ नं० २-मैं सदके, कैसी प्यारी और खूबसूरत मालूम होती है। एक ऐसी ही दूसरी तसवीर मेरे पास भी है।

मजहूल-वह किसकी है?

तश्राज़ नं० २-आपकी।

मजहूल-किस मुसव्विर ने उतारी है?

तश्राज़ नं० २-उस मुसव्विर का नाम है प्यार का फरिश्ता।

मजहूल-प्यार का फरिश्ता? अच्छा, वह तसवीर कहां है? खूब किया, क्या मैं ज्यारत कर सकता हूं?

तश्राज़ नं० २-शौक से।

मजहूल-लाइये।

तश्राज़ नं० २-आप तलाश फरमाइये।

मजहूल-कहां है?

तश्राज नं० २-मेरे दिलदार, दिल में। (गाना दोनों का)

गाना।

मजहूल-चंदर सूरज तुझ पर फिदा अदायें हैं बलिहार।
दिलबर नाज़ुक नाज़नीन निसार जायें हज़ार॥चंदर०-

हाथ हैं गोरे रंगीन हेनावाले ।
फिरो आशक़ के गले बाँहें डाले ॥

तन्नाज नं० २–मेरी हस्ती का दुनिया में सहारा जोबन ।
देखो छूना न अभी मेरा खोदारा जोबन ॥
मैंने किन मेहनतों मे है सँवारा जोबन ।
हाय बदमस्तियों से लूटोगे प्यारा जोबन ॥

मजहूल–हाय हाय नज़र न लग जाये, कमर न बल खाये, छुरी न चल जाये ॥ हाथ०– (मजहूल हाथ मिला के जाना)

तन्नाज़ न० २–गया, मेरा प्यारा गया; मेरा सुख मेरा सहारा गया। मेरे प्यारे निसार, ईद गिर्द की दुनिया जो अभी तुम्हारी मौजूदगी से रौशन और खूबसूरत नज़र आ रही थी, अब स्याह और खौफ़नाक नज़र आती हैं। तबियत जो फूल की तरह खिली हुई थी, अब आप से आप मुरझाई जाती है:-

वह उमंगें, वह हंसी, और वह सब जोश गये ।
तुम गये, ऐश गया, जब्त गया, होश गये ॥

(तन्नाज़ का सरे नंग बैठना; मिर्जा झक्की का आना)

मिर्जा झक्की–(खुद से) या अजायब, खटमल थी कि पलंग की चूल में घुस गई; जूएं या पिस्सू थी जो गुदड़ी में छिप गई; चमगदड़ी थी कि जो अंधेरे में जाकर उलटी लटक गई; उल्लू थी कि उजाड़ मकान में जाकर बैठ गई? आखिर गदहे से ज़रा ऊँची और ऊँट से ज़रा नीची औरत आँखों के देखते ही गायब हो गई तो कहां? सब जगह देख आया, कहीं पता न मिला। पानी में गोता लगाया, हवा से पूछा, ताजुलमलूक बनकर जानवरों से दरियाफ्त किया, पत्थर उठा उठाकर देखे, ज़मीन खोदी, क़ब्र में तलाश किया। लेकिन उस अल्लामा का कहीं पता न मिला। अब क्या करूं? कहाँ जाऊँ? दुनिया भर में तो फिर आया

सिर्फ आसमान बाकी रह गया है। अगर सीढ़ी मिल जाती, तो वहां भी हो आता। (तन्नाज़ को देख कर) यह कौन? कम्बख्त, यह सर झुका कर नाक से ज़मीन क्यों सूँघती है। जाग रही है या ऊँघती है? (करीब जाकर) है तो ठीक किसी बेवकूफ की जोरू बनने के लायक। बेगम साहिबा!

तन्नाज़ नं० २–जनाब।

मिर्ज़ा झक्की–हैं, यह क्या आपके गालों पै आँसुओं के निशान नज़र आ रहे हैं? क्या आप किसी के ग़म में रो रही हैं?

तन्नाज़ नं० २–जी नहीं।

मिर्ज़ा झक्की–नहीं नहीं, कैसे? आपकी लाल लाल आँखें चुगली खा रही हैं। (तन्नाज नं० १ का आना और छिप के देखना।)

तन्नाज़ नं० १–हैं! यह क्या बात, मेरा खाविंद और पराई औरत के साथ।

मिर्ज़ा झक्की–हुक्म हो तो मैं आँसू पोंछ दूं।

तन्नाज़ नं० २–माफ़ कीजिये, इसकी कोई ज़रूरत नहीं।

मिर्ज़ा झक्की–आप तो तकल्लुफ़ करती हैं। मेरी जेब के तमाम रूमाल हमेशा हसीन औरतों के आँसू पोंछने के लिये वक़्फ़ रहा करते हैं।

तन्नाज नं० १–देखो मूए झडूस को। अपनी आशना के साथ मठार मठार के बातें कर रहा है।

तन्नाज़ नं० २–जनाब, अगर मेरे साथ आप कोई मेहर-बानी करना चाहते हैं, तो यह बताइये कि यहां गाड़ी कितनी दूर पर मिलेगी।

मिर्ज़ा झक्की–बेगम! गाड़ी की क्या ज़रूरत है। कहिये तो मैं अपनी गोद, कंधे और सर आँखों पर उठाकर आपको घर पहुंचा आऊँ।

तन्नाज़ नं० १ – अच्छा मूए, मैंने सब देख लिया। अगर मैंने इस फाफा कुटनी के मुंह और तेरी दाढ़ी दोनों को झुलसा न लगाया, तो मुझे पठानी न कहना।

तन्नाज़ नं० २ – क्या आप गाड़ीखाने तक जाने की तकलीफ़ गवारा फरमायेंगे ?

मिर्ज़ा झक्की – अजी बेगम ! गाड़ीखाना क्या, मैं तो आपके घर तक पहुँचाने को तैयार हूं।

तन्नाज़ नं० २ – बड़ी मेहरबानी।

गाना।

तन्नाज़ नं० २ – मोहिं पहुँचा दो मेरे मकान को साहब।
तन्नाज़ नं० १ – हां हां जाओ छोड़ आओ जनाब।
तन्नाज़ नं० २ – अभी जाऊँगी मैं अपने घर को॥ मो०–
मिर्ज़ा झक्की – मैं भी आऊंगा छोड़ने तुम्हारे घर को।
तन्नाज़ नं० १ – तोड़ूं जूती में मैं तेरे सर को घर को।
हाय हाय अब मैं क्या करूं ज़हर खा मरूं॥

(मिर्ज़ा झक्की का तन्नाज़ नं० २ को पहुँचाने जाना; तन्नाज नं० १ का गुस्से से देखना।)

तन्नाज़ नं० १ – अफसोस, कैसा बेवफा, कैसा तोता चश्म है। मर्दों की मोहब्बत का कोई भरोसा नहीं। ये बीबी को तो ध्यान में ही नहीं लाते हैं। घर में चाहे नेमत रक्खी हो, मगर उसकी परवाह नहीं करते हैं ; बाहर की सड़ी हुई मिठाई पर मक्खियों की तरह भिनभिनाते हैं। हैं, तसवीर किसकी ? समझी ; समझी। शायद उस कहवा के खाविंद की होगी, जो बेपरवाही में यहाँ गिरा गई या अपने आशना के कहने से नफ़रत के साथ फेंक कर चली गई। (मिर्ज़ा झक्की का आना।)

मिर्जा झक्की–आहा मिली, आख़िर मिली । मगर यह भैंस की बेटी खड़ी खड़ी क्या करती है। और यह क्या तसवीर? हां, ज़रूर इसके किसी आशिक की होगी।

तन्नाज़ नं० १–(खुद से) अहा! जब तसवीर इतनी खूबसूरत है, तो यह आदमी कितना खूबसूरत होगा। ओ बेवकूफ, बदबख्त औरत! किस्मत से तुझ ऐसा खूबसूरत शौहर मिला था, इसको तो यों सीने से लगाकर रखना लाज़िम था।

(तसवीर को सीने से लगाती है)

मिर्जा झक्की–ओफ, सीने से लगाती है।

तन्नाज़ नं० १–आहा! इस तसवीर में खुशबू कितनी प्यारी आ रही है। (सूंघती है)

मिर्जा झक्की–अररररर, बोसा भी लेती है।

तन्नाज़ नं० १–मुझे ऐसा खाविंद मिला होता, तो मैं कुरबान हो जाती। (बंद में लेती है)

मिर्जा झक्की–बस बस, अब तो इसकी बेहयाई मुझ से देखी नहीं जाती। (ज़ाहिर होकर) बेग़ैरत, कमीनी, मुरदार, यह क्या लिये है?

तन्नाज़ नं० १–तेरी रुसवाई का आईना। देख, और बोल यह कौन है?

मिर्जा झक्की–अरे, यही तो मैं पूछता हूं यह कौन है।

तन्नाज नं० १–बस, बस, मैं तुम्हें एक घंटे की मोहलत देती हूं। अगर तुम सारे शहर में अपना फज़ीहता कराना नहीं चाहते, तो पहिले इस जवान से और मुझ से माफी मांगो।

(चली जाती है)

मिर्जा झक्की–समझे? बीबी के इस जवाब की मुझे तो पहले ही से उम्मीद थी। कम्बख्त, कहबा, अपने आशिक की तसवीर

हरवक्त सीने में लगाये रखती है, और कुछ पूछने पर कटही कुतिया की तरह भबकती है: या बारी ताला यह कौन होगा फोटो वाला, जिसने निकाल दिया मेरी बीबी की वफादारी का दीवाला। नवेली ! ओ नवेली !! अरी ओ नवेली के बाप की बच्ची (नवेली का आना)

नवेली–जी जी हाज़िर हुई।

मिर्जा झक्की–देख यह तसवीर।

नवेली–बहुत अच्छी है।

मिर्जा झक्की–अरे यह तो हर आंखवाला कह सकता है ?

नवेली–तो फिर आप क्या पूछते हैं।

मिर्जा झक्की–मैं यह पूछता हूं कि इसको पहचानती है ?

नवेली–जी नहीं।

मिर्जा झक्की–तेरी बेगम इसको पहचानती है ?

नवेली–जी नहीं।

मिर्जा झक्की–इससे किसी रोज बातचीत हुई थी ?

नवेली–जी हरगिज़ नहीं। (स्वः) उई मैं जवान, जहांन पराये मर्द से बात क्यों करने लगी, मूआ मुझे खूबसूरत देखकर डोरे डालने लगता तो क्या करती !

मिर्जा झक्की (स्वः में) डोरे डालने लगता ! औरत क्या थी शहद थी, जो मक्खी देखते ही चाटने लगती। (ज़ाहिर) अरे मैं पूछता हूं, तुझसे नहीं तेरी बेगम से कभी बातचीत हुई थी ?

नवेली–कभी नहीं।

मिर्जा झक्की–कोई रुक्का ले के गई थी।

नवेली–उं हूं।

मिर्जा झक्की–कोई बेगम से मिलने आया था ?

नवेली–उं हूं।

मिर्जा झक्की–किसी वक्त? सुबह, शाम, दोपहर, चार-पहर, बत्ती के बाद, आधी रात को, पौनी रात को?

नवेली–उं हूं, उं हूं। (चली जाती)

मिर्जा झक्की–(स्वगत) उस मुरदार ने तुझे पहले ही से कुछ देदिला कर गांठ रक्खा है। मगर मैं जब तक उसकी पैदाइश से मौत तक का पूरा कच्चा चिट्ठा न मालूम कर लूंगा, कभी चैन से न बैठूंगा। ओ खुदा, ओ खुदा, यह क्या इनकलाब हुआ। औरत फिरी किस्मत फिरी, नौकर फिरे, चाकर फिरे, सारा कुनवा कबीला फिर गया। इतना ही नहीं, इसके साथही कम्बख्त दरवाज़े का कुत्ता भी फिर गया। इस नापाक को पेश्तर फाटक के पास कोई आदमी आता हुआ नज़र आता था, तो झट उठकर भंकना शुरू करता था और अब गैर शख्स कम्पौंड में दाखिल हो कर मकान में घुस पड़ता है, तो भी यह कम्बख्त कन्नी दबाये चुपका पड़ा रहता है।

प० शख्स (आकर) मिर्जा झक्की का मकान यही है?

मिर्जा झक्की–क्यों क्या काम है?

प० शख्स–मुझे उनसे तो कोई काम नहीं

मिर्जा झक्की–फिर?

प० शख्स–उनकी हसीन और खूबसूरत बीबी से मिलना चाहता हूं।

मिर्जा झक्की–अबे उल्लू के बच्चे यह तो मैं भी जानता हूं कि, जब तक मेरी औरत ज़िन्दा है तब तक सब को उसी से काम रहेगा। मुझसे किसी को सरोकार नहीं, मगर तू आया कहां से है?

प० शख्स–सराय से, मगर पता बताने के लिये मना किया है।

मिर्ज़ा झक्की—अच्छा बोल किस लिये आया है ?

प० शख्स—परदेस में कोई मुसाफिर आया है, और उसने मिर्ज़ा साहब की औरत को यह रुक्का लिखा है ।

मिर्ज़ा झक्की—रुक्का ! रुक्का ला मुझे दे ।

प० शख्स—जी नहीं, यह मिर्ज़ा साहब की औरत को देने का हुक्म है ।

मिर्ज़ा झक्की—अरे तो मिर्ज़ा की औरत मुझी को समझ ले (रुक्का देखकर) हां हां मैं भूला, मैं तो मर्द हूं, मिर्ज़ा झक्की हूं, मेरी औरत मेरे ही पास रहती है ।

प० शख्स—सलाम, सलाम [illegible]

मिर्ज़ा—सलाम सलाम, मगर हां ज़रा ठहर ।

(तस्वीर को खूब गौर से रुख से मिलाना)

प० शख्स—(खुद से) हैं ! यह यों क्या करता है ?

मिर्ज़ा झक्की—(खुद से) आंख नहीं, कान नहीं, नहीं यह नहीं ; शायद रुक्का वाला वही मुसाफिर होगा (फोटो को दिखाकर) अबे ए, तू इसको पहचानता है ?

प० शख्स—जी नहीं ।

मिर्ज़ा झक्की—जी नहीं ! अच्छा तो निकल पाजी बेवकूफ़ । ओफ़ क्या करूं । यह तो स्पर्मापिल्टी के कूड़े की तरह आशिकों का गड़खाना बढ़ता ही चला । एक फोटो वाला, दूसरा रुक्का वाला, मेरी जोरू है या मुसाफिर की धर्मशाला ।

(दूसरे शख्स का आना)

दू० शख्स—(आकर) मिर्ज़ा झक्की का मकान यही है ?

मिर्ज़ा झक्की—(खुद से) आफ़त पर आफ़त । (ज़ाहिरा) क्यों बे तू कहां से आया है ?

दू० शख्स—मुझे मिस्टर चोक़न्दर बेग ने भेजा है ।

मिर्ज़ा झक्की–(खुद से) बहुत ठीक, लीजिये यह भी शायद मुलाक़ात का वक्त ठहराने आया है। (ज़ाहिरा) बोल तू यहां किस लिये आया है।

दू० शख्स–सिर्फ मिर्ज़ा झक्की की बीवी को अगुंश्तरी देने।

मिर्ज़ा झक्की–(खुद से) सत्यानासी, बलायेनागहानी; यह तीसरी निशानी। अरे यारो! यह मेरा मकान कोई शरीफ आदमी का मकान है, या किसी बाजारी बेस्वा की दूकान है। (ज़ाहिरा) हां यही मिर्ज़ा झक्की का मकान है। मैं ही अपने ख़ाविन्द की बीबी हूं, अररररर तौबा तौबा मैं फिर भूला, मैं ही अपनी बीबी का ख़ाविन्द हूं, ला कहां है वह अगुंश्तरी!

दू० शख्स–लीजिये यह है।

मिर्ज़ाझक्की–और कुछ कहलवाया है।

दू० शख्स–जी हां, बाद सलाम के कहा कि आज मेरी जोरू अपने मैके को गई है, यह अंगूठी लेलेना, और... ..।

मिर्ज़ा झक्की–बस, बस! तू भी उनको बाद सलाम के कहना कि, मिर्ज़ा झक्की की औरत ने कहा है कि आज मेरे ख़ाविंद की तबियत गरम हो रही है, इसलिये मामला कुछ ठीक नहीं है।

दू० शख्स–हैं मामला क्या?

मिर्ज़ा झक्की–गदहे तू कह देना वह आपही समझ जायगा।

दू० शख्स–(खुद से) हैं आज इस बुड्ढे को क्या हो गया है।

मिर्ज़ा झक्की–(फोटो दिखाकर) देख तू इस शैतान ज़ादे को पहिचानता है।

दू० शख्स–जी नहीं साहब।

मिर्ज़ा झक्की–नहीं साहब! निकल यहां से। ओफ अब मुझसे सब्रो तहम्मुल नहीं हो सकता. ज़ब्त बिलकुल हाथों से

जाता रहा: अगर यहां और ज्यादा देर ठहरूंगा तो कोई न कोई और किसी आशिक की तरफ से सौगात ले कर पहुंचेगा।

(तीसरे शख्स का आना)

ती० शख्स-(आकर) क्यों भाई मिर्जा झक्की का मकान यही है।

मिर्जा झक्की-नहीं भाई। अब मुझे ज़रा सहुलियत के साथ बेहोश हो जाने दो। (लेट जाता है)

ती० शख्स (खुद से)-अजब दीवाना आदमी है। मैं मकान में आया और यह सोगया। (जाहिरा) अरे भाई कहो तो सही, मिर्जा झक्की का यही मकान है, (जवाब न पाकर) ओहो इसको तो सांप सूंघ गया. अरे भाई जवाब नहीं देते हो तो मैं अंदर जाता हूं। (जाना चाहता है)

मिर्जा झक्की-(उठकर) नहीं, नहीं, खोदा के लिये अंदर न जाना। बोल तू किस के पास से आया है, दाढ़ी मोंछ वालों से मिलना चाहता है या चोली साढ़ी पहिनने वाली की मुलाक़ात रखता है।

ती० शख्स-(खुद से) यह बुड्ढा तो बिल्कुल इनसानियत से जा चुका है। (ज़ाहिरा) अबे घुघू! मैं मिस्टर क़लन्दर बेग की तरफ से मिर्जा झक्की की बीवी के पास आया हूं। और यह रुमाल बतौर तोहफा लाया हूं।

मिर्जा झक्की-रुमाल! ला दे जल्दी से।

ती० शख्स-मगर साहब, जिनको रुमाल देना है वह बेगम साहबा कहाँ हैं।

मिर्जा झक्की-वह, वह, बड़े नेक और ज़रूरी काम में मशग़ूल हैं।

ती० शख्स-यानी, यानी?

मिर्जा झक्की–यानी सुबह से अबतक गरीब मिसकीनों को खैरात कर रही हैं।

ती० शख्स–ऐसा है?

मिर्जा झक्की–हां ऐसा है। (रूमाल छीनकर) बस अब आप चलदो, भागो दौड़ो, आपके लिये यह थप्पड़ लात घूंसा है।

(मारने चलना)

ती० शख्स–अजी हाथ न उठाइये।

मिर्जा झक्की–नहीं, नहीं, इनाम लेते जाइये। (मारना)

ती० शख्स–अररर बापरे, अच्छा साहब सलाम।

(भाग जाना)

(मिर्जा झक्की का आजिज होकर, अफसोस करना और गाना)

गाना।

मिर्जा झक्की–हाय ग़ज़ब सितम अब क्या करूं।
किसी तालाब में जाके डूब मरूं।
सहूं ज़िल्लतें और फिर भी ज़िन्दा रहूं।
धीर धरूं भी यारो तो कैसे धरूं॥ हाय०-
काटूं नाक तो मैं कैद में खुदही पडूं।
मारूं जान से तो खुदही फांसी चढूं॥
सबसे बढ़कर सहल तरकीब ये करूं।
पिंजरापोल में लेजाके बस छोड़ दूं॥
अल्ला मेरे यह कैसी हुई, ऐसी औरत तूने मुझी को दी॥
मनहूस लुच्ची है सांपिनी इज्ज़तकी खूब चटनी बनी०॥

(जाना)

अंक पहिला। सीन तीसरा।

शाही महल।

(ताहिर किलेदार का आना, शाहका बैठेहुए दिखाई देना)

ताहिर–उफ़ ! क़हर ! सितम ! ज़ुल्म ! तूफ़ान।

बादशाह–ताहिर ! ताहिर ! क्या है ?

ताहिर–रहमदिल सुल्तान ! गज़ब होगया। शाहज़ादे सैफ ने सैकड़ों पहरागीरों को तहे तेग करडाला। और मय अपने खुशामदी दोस्तों के किला तोड़कर बाहर निकल गया।

शाह–उफ़ ! गज़ब हुआ। सैफ बाग़ी होगया।

ताहिर–मेरी राय है कि, जल्द बंदोबस्त करना चाहिये।

शाह–इस कदर घबराने का सबबही क्या है। वह तने तनहा हमारा कर क्या सकता है।

ताहिर–जी नहीं। बर वक्त खंरेज़ी जो कुछ कलमे उसकी ज़बान से निकल रहे थे, उनसे मालूम होता था कि, वह आप से मुकाबिला करने का पूरा पूरा सामान कर चुका है।

शाह–मगर किसके साथ ?

ताहिर–उन ओहदेदारों के साथ कि जिनको आपने मनसबों और ओहदों से बर तरफ़ कर दिया था। सैफ ने उन्हीं को उभार कर अपनी राय में शामिल कर लिया है:-

जो कमीन लोग हैं, वह बदला लेंगे अब जरूर !
जितने उसकी फ़ौज में हैं, सब के सब हैं पुर फतूर॥

शाह–आह ! बुरा हुआ। कीला हुआ सांप डसने के लिये मंतर को तोड़ निकला। मगर ख़ैर, मैं तुम को शाही नामा देता हूं। फौरन ले जाओ और उससे बाग़ी होने का हाल दरियाफ्त करके आओ। (बादशाह का जाना)

ताहिर-बहुत अच्छा, दीजिये और जल्दी कीजिये-
फ़ितनये महशर उठा, किले में शोरो शर के साथ ।
सैंकड़ों बिच्छू निकल आये हैं,एक अजदर के साथ ॥
काफ़िला भूतों का है, उस काफिरा अकफर के साथ ।
होगया कीना फलक को, बे गुनाह मज़हर के साथ ॥
हाय ! किस्मत में पड़ा है, मारना पत्थर के साथ ।
(शाह का अंदर से नामा लेकर आना, गाना दोनों का)

गाना ।

शाह-जा, फुसला, फिकर बनाकर जा ।
ताहिर-पुरफ़न उससे बढ़कर हूं मैं, उसको ऐसा झांसा दूं मैं,
शाह-छीनो खंजर करदो अबतर दिखादो नीचा ।
ताहिर-डालूं फंदा कर दूं ठंडा बनाऊं अंधा ।
वह बेडर हूं शेर नर हूं खा जाऊं कच्चा ॥
पूरी फितरत दिखाऊं जाऊं, क्या समझा है मैं ऐसा वैसा ।
अरे नादान, देखना करता हूं क्या इफ़्तरा ।
मचे तूफान नागहान मैं हूं कितना चलता पुरजा ॥
(दोनों का दो तरफ जाना)

अंक पहिला । सीन चौथा ।

सैफ की छावनी ।

(शहर के बाहर किले के दरवाजे के सामने सैफ के बागी लश्करके खेमों का इस्तादा नज़र आना और सहेलियों का गाना)

सहेलियां: गाना ।

सवरियाँ सवरियाँ सवरियाँ रे, काहे मारे नजरिया ।

काहे मारे नजरिया काहे मारे नजरिया॥ म०—
नीचे बहे गंगा ऊपर बहे जमुना।
बीच में ठाढ़ो कन्हैया रे॥ काहे मार०—
इत गोकुल उत मथुरा नगरी,
बीच में ठाढ़ी मुंदरिया रे॥ काहे मार०—

(सब का जाना)

सैफ—आहा! तमाम जंगल मस्त और बेखुद हो रहा है। मतवाली और लचकती हुई हरएक शजर की डाली में जोश दिलावरी झूले ले रहा है—

उम्मीद सल्तनत में है, लश्कर पड़े हुए।
हैं मेरे जांनिसारों के खेमे गड़े हुए॥
आमादा जंग पर हैं, रिसाले खड़े हुए।
ज़ोरों पे इन दिनों हैं, नसीबे लड़े हुए॥
दम भर में सरपर पहुंचेंगे, खंजर तुले हुए।
दरवाज़े सारे शहर के होंगे खुले हुए॥

खुदगरज—हां, बजाव, बजाव, कत्ल और खूनका बाज़ार गरम करने के लिये फौजी बिगुल बजाव! दरबारियों, सलाहकारो, रईसो! सदाये कार जार सुनते ही, अपने नये शहनशाह के इस्तकबाल के लिये जल्द चले आओः—

कोई दममें छीनता है, तख्त इज्ज़ोजाह का।
ताज लेने आरहा है, अब पुराने शाह का॥
है ये लाज़िम कहता जाये हर मुसाफिर राह का।
शहर में सिक्का चलेगा सैफ शाहनशाहका॥

आफ़ताब इक़बाल का है, रोशनी डाले हुए।
सैफ बाहर शहर के हैं, छावनी डाले हुए॥

बुलहवस–अगर थोड़ी देर इसी तरह जोश और वल-वला बहादुरी रगों में ज़ोर शोर के साथ कायम रहा, तो मैं क़सिमिया अर्ज करता हूं कि फिर तो यह क़िला आज ही फतह होगया।

ताहिर–(आकर) होगया, बुरा होगया। जिस ख्याल के पैदा होने की कयामत तक उम्मीद न थी, वह अचानक पैदा होगया।

खुदगरज–हैं, तू कौन है, जो जंगी बेड़े में बेधड़क चला आया है?

सैफ–शायद, कोई जासूस होगा।

ताहिर–जी नहीं! मैं तो पैगाम्बर हूं और शहनशाह मलिकुल आदिल की तरफ से नामा लाया हूं।

सैफ–नामा! कैसा नामा? जो शख्स सल्तनत का बाग़ी कहलाता है, उसके लिये नामा भेजा है? खैर, पढ़ के सुना क्या लिखा है?

ताहिर–हुजूर आप खुदही मुलाहिजा फरमाइये।

सैफ–नहीं, नहीं, मेरे गैज़ो गज़ब की सुर्ख आंखें काली रोशनाई के मातमी हरफों को पढ़ना पसंद नहीं करतीं। और जिस तहरीर के पढ़ने से मेरे बहादुरों के जोश ठंढे हो जाने वाले हों, उसको एक नज़र देखने के लिये भी मेरी तबियत मुझको इजाज़त नहीं देती।

ताहिर–आखिर आप मजमून न पढ़ेंगे; तो जवाब कैसे मरहमत फरमायेंगे।

सैफ–हां इसका जवाब मैं अच्छी तरह अदा कर सकता

हूँ ! अरे कोई है ? जल्द जाओ और एक अँगेठी में दो चार तेज धारवाली छूरियाँ गरम करके लाओ ।

ताहिर—इलाही ! ख़ैर; हुज़ूर ! आप नामा मुलाहिज़ा फरमाकर जवाब तहरीर फरमाते हैं या छूरियां गरम करवाते हैं ?

सैफ—उजलत न कर, उजलत न कर, यह सामान जवाब ही के लिये मुहय्या किये जाते हैं । ज़रा तहम्मुल कर । (कागज़ खोल कर) आहा ! काग़ज़, काग़ज़:—

लगादूँ आग हर ज़ुमले में ता ज़ुल्मत निकल जाय ।
उड़ादूँ धज्जियाँ इसकी कि किस्सा पाक हो जाय ॥
सरापा चीर दूँ सीना कि तेरा नेश [illegible] जाय ।
छुरी इस तरह पर फेंकूं, कि निस्फ हर हर्फ हो जाय ।
जला दूँ इसका सरनामा कि सिरनामाही उड़ जाये ॥

(एक सिपाही गर्म छुरी ले आता है, सैफ एक हाथ में गर्म छुरी और एक में ख़त लेकर कहता है ।)

बेशक, बेशक ! ऐ छुरी, ख़ूनी छुरी, आतशी छुरी:—

वहम जिस तरह ताकत है, हर एक मज़बूत पत्थर में ।
वहम है सोज़ जैसे आग के हर एक अख़गर में ॥
रवां गर्दिश है तूफानों में और सर्दी समुन्दर में ।
हवा है रेज़े रेज़े में ख़लिश हर ख़ार के सर में ॥
योंही इस सीनये काग़ज के हरफों में समा जा तू ।
छुरी है गर जो आतश की तो फौरन इसको खा जा तू ॥

(छुरी भोंक भोंक के काग़ज़ जलाता है)

ताहिर—अफसोस !

सैफ—अफसोस, इस मनहूस लफ़्ज़ को मेरी छावनी के बाहर जाकर दोहराव ! यहां ऐसे बीमारी और सुस्ती फैलानेवाले

जुमले कानों के लिये मुज़िर शुमार किये जाते हैं। जोश और वलवलों से भरे हुए दिलों के नज़दीक शुगून बद् समझे जाते हैं।

ताहिर–(कागज को उठाकर) आह ! मैं इस धुआंधार कागज का शाह को क्या ज़वाब दूँगा ?

खुदगरज–बस कह देना कि जिस कागज के बादल को आपने गुस्से के शोलों को ठंढा करने के लिये भेजा था, वह अपने पानी को बरसा न सका। सैफ की छावनी में आतिशे गैज़ो ग़ज़ब की इस कदर तपिश थी, कि उसकी गरमी से मय पानी के जलकर खुद्‌ही ठंढा हो गया।

ताहिर–आह ! शाही खत और यह जवाब !

सैफ–हाँ ! यही जवाब। जिस वक्त हुजूर मलिकुल आदिल दर्याफ़्त फरमाएं, तो फौरन् इस जिगर फिगार कागज़ को पेश कर देना और कह देना कि जिस तरह इसका सीना आतशी छुरियों से तराशा गया है, उसी तरह आपके हरेक तरफ़-दार जंगी जवानों का कलेजा चाक किया जावेगा। इस शाही कागज़ का जवाब तो सिर्फ आतशी छुरियों से दियागया है। मगर आपके दिलावरों की गुस्ताख़ जवानों का जवाब ख़ूनी खंजरों से दिया जायगा।

ताहिर–नहीं ! नहीं ! इस कदर दिल खराश जवाब न दीजिये !

सैफ–वजह; सबब ?

ताहिर–सबब यह है, कि वह आपके बुजुर्ग बाप हैं ! उनका अदब कीजिये !

बुलहवस–खामोश ! कैसा बाप और कैसा अदब ?

खुदगरज–दुनिया एक बहरे जख़्ख़ार है, और खुदा ने उसके किनारे पर हर औलाद आदम को दर्जे इन्सानियत में एक-

सां बराबर पैदा किया है। अब रही सिर्फ साहिल मकसद पर पहुँचने के लिये दानाई की ज़रूरत। जिनमें अक़्ल और कूवत ज़्यादा होती है, वह तैर कर पार हो जाते हैं। और जो कम-जोर बेवकूफ हैं, वह अदब, लिहाज, शर्म, और हया की मौज़ों के थपेड़े खाकर डूब जाते हैं।

ताहिर-सच है ! जिन शरीफ रईसों को तुम जैसे दरोग़-गो मशविराकार दोस्त मिलजाते हैं, उनके दिमाग बुज़ुर्गों के अदब, लिहाज शर्म और हया करने से इसी तरह बदल जाते हैं। डरो, डरो ! अपनी झूठी जबानों से आतशी जुमले बरसा कर, बसते हुए घरों में आग लगाने वालो, डरो ! ऐसा न हो कि, कातिबे आमाल, तुम्हारे आमाल नामों को खुदा के सामने ऐसे वक्त पेश करें कि, जब वह शाने कहारियत में अपने जलाली इन्साफ का जलवा दिखा रहा हो; और फिर तुम्हारी इस खुशामदी हस्ती का अंजाम बुरा हो।

सैफ-ताहिर ! ताहिर ! जबान को ज़्यादा गुस्ताखी का मौका न दे। सिर्फ इतना ही बता कि, बाप को हम ज़ी इज़्ज़त, अदब और लिहाज के लायक किस लिये समझें ?

ताहिर-इस लिये कि, वह न होते, तो दुनिया में तुम किस तरह पैदा होते ?

सैफ-ओह ! यह कोई बात नहीं। औरत और मर्द दोनों के माद्दे में नफसानियत होती है, और ख्वाहिशे नफसानी की कभी यह मंशा नहीं होती है कि, उससे औलाद पैदा हो।

ताहिर-फिर क्या होता है ?

सैफ-नफसानी लज़्ज़तों का जोश।

ताहिर-यह हैवानों में हुआ करता है !

सैफ-और कुदरत ने इन्सानों को भी बख़्शा है। सुरूर-

नफ़सानियत में मस्त होकर जिस तरह एक हैवान अन्धा हो जाया करता है। उसी तरह इन्सान भी अपनी तबीयत की गर्मियों से हवाये वस्ल में वे खुद होकर झूमने लगता है।

ताहिर-माना कि. ख्वाहिशे वस्लही इन्सान को हैवानी तरीके सिखलाती है, मगर उसका नतीजा तो नेक आता है। इस हाल से कुदरत एक रूह को दुनिया में खिलअते फर्ज़न्दी से मुमताज़ फर्माकर रवाना करती है और वह आइन्दा माँ. बापों ही के हाथों से परवरिश पाकर दुनिया के आबादी का सिलसिला ठहरती है।

सैफ-मगर यह कारे खुदावन्दी है। वरना माँ. बाप. को यह कब मालूम होता है, कि ख्वाहिशे नफसानी का नतीजा नेक होगा, यानी कोई बेटी या बेटा पैदा होगा।

ताहिर-बेशक! इल्मे गैब खुदाही जानता है। मगर बामे आसमान से दुनिया में उतरने के लिये माँ बापों ही का वसीला कमन्दे जिन्दगी समझा जाता है:—

रगड़ खाते हैं दो पत्थर, तो होता है शरर पैदा।
ज़मींपर मेंह बरसता है, तो होता है शजर पैदा॥
फलक करता है जब गर्दिश, तो होता है क़मर पैदा।
बशर करता है जब मेहनत, तो होता है समर पैदा॥
योंहीं लाज़िम है हर शै का, हो इम्दाद गर पैदा।
बजुज़ माँ बाप के होता नहीं, नूरे नज़र पैदा॥

खुदगरज-ठीक, ठीक। थोड़ी देर के लिये हम मान लेते हैं कि, किसी क़दर माँ बाप का एहसान मानना वाजिब है।

ताहिर-सिर्फ किसी क़दर?

बुलहवस-हाँ! सिर्फ किसी क़दर।

ताहिर-यानी?

सैफ़-यानी, जितना एहसान माली का एक बीज पर होता है, उसी क़दर बाप का एहसान औलाद पर होता है।

ताहिर-यह कैसे?

सैफ़-जब तक माली के हाथ में बीज होता है, तबतक उसे हर बात का अख़्तियार होता है। चाहे बीज को फेंक दे, चाहे तोड़दे, चाहे जलादे। मगर जब एक बार ज़मीन में बो दिया, तो फिर माली का उसपर कोई अख़्तियार नहीं रहा:—

कह नहीं सकता, कि बूँदें मेंह की गिरने न पायें।
कह नहीं सकता, ज़मीं के पौदे में शाखें न आयें॥
कह नहीं सकता, शजर से तुझ में पत्ते भर न जायें।
कह नहीं सकता, कि तुझ में फूल फल लगने न पायें॥
जैसे माली बाद बोने बीज के मजबूर है।
वैसेही माँ बाप का बादे हवस दस्तूर है॥

ताहिर-ख़ैर, अगर इतना भी मान लो, तौभी बहर सूरत माँ बाप का हक़, एहसान, औलाद पर साबित होता है।

सैफ़-बिल्कुल नहीं। ख़ुदा की बड़ी बड़ी हैरत अंगेज़ कार्रवाइयों के सामने इस अदना सिलसिले की इस क़दर तौक़ीर करना महज़ ख़ाम ख़्याली है। और कौन कहता है कि, बग़ैर माँ बाप के कोई चीज या औलाद पैदा नहीं होती है?

ताहिर-तमाम ज़माने के अच्छे अच्छे दाना और हिकमतवालों के सुबूत।

सैफ़-सरासर झूठ! इस ज़मीन के माँ बाप कौन हैं? इस आसमान के माँ बाप कौन हैं? कोई नहीं। दरिया, सितारे, पहाड़, फ़रिश्ते तमाम अज़ली चीज़ें क़ुदरते ख़ुदा से पैदा हुई हैं-

कौन था फायल हुआ जो अहले आलम के लिये।
कौन था मस्जिद बना जो अर्शे आजम के लिये॥
बाप किसको था बनाया हक़ ने आदम के लिये।
क्या ज़रूरत बाप की थी इब्न मरियम के लिये॥

ताहिर-ओ मग़रूर! इसरार इलाही से बे ख़बर! सुन, खुदा अगर तमाम मख़लूक़ात को माँ बाप ही के ज़रिये से पैदा करता, तो दुनिया वाले यह कहते कि, खुदा में इतनी ताक़त न थी, कि वह बग़ैर माँ बाप के भी किसी को पैदा कर सकता। इसी बायस से बे माँ के आदम को पैदा किया और सिर्फ बग़ैर बाप के इब्न मरियम का ज़हूर हुआ।

सैफ-कुछ नहीं, कुछ नहीं। पहाड़ पर कुदरत से एक दरख़्त पैदा होता है, तो क्या पहाड़ उसको अपने ठंडे पानी से परवरिश नहीं करता है? जानवर को अपनी औलाद से कुछ नफा नहीं होता है, तो क्या वह अपने बच्चों की हिफ़ाज़त नहीं करता है? इसी तरह इन्सान अगर अपनी औलाद को पाले, या परवरिश करे, तो यह कुदरत का हुक्म है; करनाही पड़ता है! इसमें माँ बाप का एहसान ही क्या है?

ताहिर-तुम्हारे ख़्याल के मुताबिक अगर औलाद की परवरिश क़ानूने कुदरत से मज़बूरन् होती है, तो फिर बतलाओ, मछली किस लिये अपनी औलाद को खाजाती है? नागिन अपने बच्चों को पैदा होतेही क्यों निगल जाती है?:-

अक़्ल सीखो, यह तरिके छोड़ दो इसरार के।
बेवकूफी से भरे हो, अज़दहे हो ग़ार के॥
क़स्द तो है रूम का, रस्ते चलो तातार के।
दायरे हैं यह जिस क़दर जुम्बिशे परकार के॥
घूम कर नुक्ते ही पर पहुँचोगे, थक के हार के॥

खुद गरज-ऐसे ख़्यालातों पर तुफ् है?

नाहिर-और तुम जैसों की दानाई पर भी जूफ़ है।

सैफ-और जूफ़ का जवाब यहाँ खंजर है। खुदगरज! काटलो ऐसे बदज़बान की ज़बान।

(खुदगरज का ज़बान काटने चलना, बादशाह का आ जाना।)

शाह-ख़बरदार, रोक हाथ!

सैफ़-क्यों? किसलिये?

शाह-इसलिये कि, इस पाये तख़्त पर इन्साफ की रोशनी फैली हुई है!

सैफ-बस, तो मैं भी इसी वजह से बाग़ी हो गया हूँ कि, इस मुन्सिफ सल्तनत पर तख़्तनशीं होकर दुनिया में कुछ नाम पैदा करूँ।

शाह-ओ बदकार! तेरी बद अफाली और ज़नाकारियों के बायस लोग तेरी सूरत से बेज़ार हैं।

सैफ-मेरी हुक्म रानी के लिये ज़र्रीन परिन्दे दरख्तों पर बैठ बैठकर अपनी ज़बानों में सुबह सादिक के वक़ दुआयें मांगते हैं।

शाह-सैफ! ऐसे बुरे ख़्यालात से दर गुज़र।

सैफ-अब तो इस ख़्याल को अपने दिमाग़ से उस वक़्त निकालूँगा, जिस वक्त यह सामनेवाला ताज उतरकर इस सर पर आ जावेगा।

शाह-और न आया, तो क्या होगा?

सैफ-थोड़ी देर में तमाम तख़्ते सल्तनत के इर्द गिर्द फौजों के परे के परे चक्कर लगाते नजर आयेंगे:-

दरख्तों पर खून, डालियों पर खून, पत्तों पर खून।
दरो दीवार पर खून, खून के छापे लगे होंगे॥

पड़े होंगे कहीं लाशें पर खुफ्ता बख्तों के।
कहीं दम तोड़ते होंगे, कहीं बिस्मिल पड़े होंगे ॥
कहीं आतश लगी होगी, कहीं घर गिर रहे होंगे।
कई पर पीटते होंगे, हजारों रो रहे होंगे ॥
चमकती होंगी तलवारें मेरे जंगी जवानों की।
हुनर में गर्दिशें शामिल रहेंगी आसमानों की ॥

शाह–आह, जिस सल्तनत के लिये तू हजारों बेगुनाहों के घर, मैदान जंग में मिसमार करना चाहता है, मैंने उन रिआयों को और उनके बच्चों को अपनी औलाद से ज़्यादा प्यार के साथ परवरिश किया है।

सैफ–आपको उनकी ज़िन्दगी पर तर्स आता है, तो इस लड़ाई से हाथ उठाने का सिर्फ एकही रास्ता है! और वह भी मेरी मेहरबानियों का नतीजा है।

शाह–सैफ! तू जो कहे, मैं करने के लिये तैयार हूँ।

सैफ–आइये और यह शाही दस्तावेज़ मौजूद है, इस पर दस्तख़त कीजिये। और सुनिये, जब तक आप जिंदा हैं, तख्त-सल्तनत पर हुक्म रानी कीजिये।

बुलहवस–लेकिन बाद मरने के सल्तनत का हक़दार इन्हें करार दीजिये।

खुदगरज़–और तमाम शहर में आज से मुनादी की जाय कि, वली अहद मज़हर नहीं, बल्कि शाहज़ादा सैफ मुक़र्रर हुआ है।

ताहिर–नहीं, यह कभी न होगा; चकोर मुँह ऊंचा करके हज़ार उड़े, मगर चांद हाथ कभी न आयेगा।

शाह–ताहिर, ताहिर! ज़िद्द न कर?

ताहिर—ओ ग़रीबपरवर ! सैफ़ को सल्तनत देना ऐसा है, गोया तलवारों के साये में मज़लूमों को सोने के लिये मज़बूर करना ! या ग़रीब बकरियों की हिफ़ाज़त भेड़ियों को सौंपना।

शाह—मगर इस वक्त मैं जो कुछ कर रहा हूं, अच्छा कर रहा हूँ ! (सैफ़ से) हाँ हाँ, लाओ लाओ, मैं शाही दस्तावेज़ पर दस्तख़त करने के लिये तैयार हूँ ।

(सैफ़ का दस्तावेज़ पेश करना; शाह का दस्तख़त करके मय ताहिर के मायूस होकर चले जाना)

बुलहवस—मगर हज़ूर ! मुद्दत तो बहुत नहीं मालूम होती है ।

ख़ुदग़रज़—कब यह बुड्ढा मरे और कब आप बादशाह बनें !

सैफ़—बहुत जल्द ।

ख़ुदग़रज—मगर आपने तो एकरार करलिया ।

सैफ़—एक़रार गया ख़ाक में:—

अब जुस्तजू रहेगी मुझे राज़े अस्ल की ।
एक शब को फ़िक्र होगी फ़क़त शाह के क़त्ल की ॥
गैरों को इनके ख़ून का मुजारिम बनाऊँगा ।
फिर मैं हूँ, मेरा हुक्म है, कुर्सी है अदल की ॥

(एकदम सब का म्यान से तलवार निकाल कर खड़े हो जाना ।)

टेब्ला ।

अंक पहिला । सीन पाँचवाँ ।

मल्का आमरा का मकान ।

(बच्चे को साथ लिये हुए आना)

गाना ।

आमरा—उजाड़ घर में किसी का बेवफ़ा सय्याद ।

तबाह करता है क्यों आशियाँ मेरा सय्याद ॥
चमन में तेरा तो हमने नहीं बिगाड़ा कुछ।
हमारी किस लिये है दुश्मन बना सय्याद ॥
किसी की आह तुझे भी तबाह कर देगी।
सताना होता बेशक बहुत बुरा सय्याद ॥
हमारी जान तो निकल जायगी जुदाई में।
चमन से दूर कहाँ हमको ले चला सय्याद ॥
क़यामत है फलक ने एक बच्चा पीस डाला है।
ग़ज़ब है एक कमर के गिर्द अंगारों का हाला है ॥
नया क़ातिल, नया दुश्मन, ज़माना होनेवाला है ॥

शाह–(आकर) इलाही ख़ैर! बेगम रंजीदा? प्यारी आमरा! तुम रो रही हो? यह रूमाल कैसा है कि, आंसू पोंछ रही हो?

आमरा–बेशक! मेरे अरमानों की किस्मत मुझे रुला रही है.

अदम के काफिले वाले ख़फ़ा हैं जाने मुज़तर पर।
उठाऊँ पाँव क्यों कर अजल, है बारे गराँ सर पर ॥
न पूछो, छोड़ दो किस्सा, मेरा तुम रोजे महशर पर।
दमे गिरियां नहीं रूमाल, मेरे दिदए तर पर।
यह एक बादल का टुकड़ा, पानी पीता है समुन्दर पर ॥

शाह–मगर इस रोने और रंज करने का बायस तो सुनाओ?

आमरा–अफसोस! क्या सुनाऊँ! :–

सितम साजी का पहलू, सर के सरवर ने निकाला है।
हुकूमत सफ को दी है, कि घर में साँप पाला है ॥

शाह–अहा, अब मैं समझा, शहजादे सैफ को जो वली अहद मुकर्र करदिया है, मल्का आमरा को इसी वजह से रंज हुआ है।

आमरा–इसी वजह से ! हाँ हाँ, इसी वजह से । ओ ना-आक़बत अन्देश बादशाह ! जो शख्स किसी काम के करते वक्त नतीजे का ख्याल नहीं रखता, वह अंजाम में हमेशा पछताता है।

शाह–इस वक्त जो कुछ मैंने किया, बे सोचे समझे किया।

आमरा–बराबर जिहालत और सरासर बेवकूफी की ।

शाह–बस, बस: हद्दे अदब से न गुज़र: बीवी होकर ख़ाविन्द के साथ बद्ज़बानी से बात न कर।

आमरा–बीवी के सर से अब हक़ शौहरी उठा लीजिये ।

शाह–क्यों, किस लिये ?

आमरा–इस लिये कि, जिस बाप ने अपने खून का पास न किया ! अपनेही हाथों से अपने बच्चों को ज़िब्ह करदिया। क्या कोई कह सकता है कि, ऐसा मर्द अपनी बीवी के साथ मुहब्बत से पेश आयेगा ? नहीं, नहीं; वह एक दिन बीवी को भी नहे तेग़ करेगा ।

शाह–यानी मज़हर को तो मैंने मार डाला है, अब तुझको भी मार डालूंगा ।

आमरा–निस्फ तो मर चुकी हूँ, निस्फ ज़िन्दा हूँ: अब मार डालियेगा ।

शाह–सच कहते हैं कि, औरतें हमेशा कोताह अक़्ल होती हैं !

आमरा–इसलिये कि, वह बेचारियाँ अपने घर की इज़्ज़त बनाने के लिये मर्दों से हमेशा लड़ती झगड़ती हैं !

शाह–नहीं, नहीं; बल्कि कुदरत ने उनको इतनी समझही नहीं दी है कि, वह किसी बात को सोच समझ कर कहें।

ओ बेवकूफ ! तू क्या जाने कि, सैफ के खूनी इरादों का मुहासरा कहां तक बढ़ गया था, अगर मैं शाही दस्तावेज़ पर खुशी के साथ दस्तखत न करता, तो वह जंग व जदल करके मुझ से सल्तनत ज़बरदस्ती छीन लेता।

आमरा–और अब क्या हुआ ?

बादशाह–मेरी ज़िन्दगी तक, ताज मेरे ही सर पर रहेगा।

आमरा–बाद ?

शाह–बाद में–

आमरा–सैफ के सर पर होगा ! भोले बुज़दिल बादशाह ! अगर मुझे पेश्तर से मालूम होता कि, तुम्हें अपनी इज़्ज़त से ज़्यादा पेट प्यारा है: तो मैं अपने मज़हर की क़सम खाकर कहती हूँ कि, तमाम उम्र कुँआरी रहना पसंद करती, मगर तुम जैसे पस्त हिम्मत–सिर्फ नाम के बादशाह के साथ शादी कभी न करती।

शाह–ओफ ! सितम ! क़हर ! प्यारी मल्का, प्यारी आमरा ! खुदा के लिये दिल हिला देनेवाले कलमे अपनी ज़बान से न निकाल ! मैं खुदा की क़सम खाकर कहता हूँ कि, दस्तावेज पर दस्तखत करते वक्त तुम्हारा और मज़हर दोनों का ख्याल गुज़रा था, मगर अफसोस ! सैफ ने इस क़दर दबाव डाला था, कि मुझे मजबूर होना पड़ा।

आमरा–सुभान अल्लाह ! सल्तनत का बादशाह और मजबूर ! दुनिया हँसेगी ! मेरी ज़िन्दगी और मेरे बच्चे की ज़िन्दगी के फूलने फलने वाले चमन को ताराज करनेवाले बादशाह ! मैं शरमिन्दा होती हूँ। लिल्लाह, मुझे न जलाओ; वर्ना मैं अपने आप भी मरजाऊँगी, और इस बच्चे को भी गला घोंट कर मार डालूंगी।

शाह – रहम, रहम: प्यारी मल्का ! तू ही बता, अगर इन्सान जालिमों में घिर जाये, तो क्या करे ?

आमरा – अपने इज्ज़त और आबरू को बेंच डाले ! अफ़सोस ! मेरे भोले और ग़रीब शौहर ! अफसोस ! :–

अन्धेरा छा गया रंजो अलम का दहरेपनाहों पर ।
न सूझा एक भी कल्मा कि, कहते उज्र ख़्वाही पर ॥
अगर मग़रूर था वो ज़ुल्म परवर कज कुलाही पर ।
तो हासिल फ़ख्र था तुमको भी अपनी बादशाही पर ॥
जमाते गोव. देते डाँट, आते इज्ज़ो जाही पर ।
न लेकिन मुहर करते वे धड़क फ़िरमान शाही पर ॥

शाह – दस्तख़त तो मैं उस वक़्त न करता, जिस वक़्त यह समझ लेता कि, न मानेगा, तो मैं भी मुकाबिला करूँगा ।

आमरा–हाय ! तो क्या तुम्हारा यह ख़्याल न था ?

शाह–नहीं, मैं हजारों बंदगाने ख़ुदा का ख़ून एक फानी सल्तनत के लिये अपने सर पर लेना पसंद नहीं करता: और यही सबब हुआ कि, मैं उसके सामने ख़ामोश हो गया ।

आमरा–हाँ, आपको अगर ख़ामोशी ने चूड़ियां पहिनाकर बेगमों की मानिन्द महलों में रहने के काबिल कर दिया है, तो परवाह नहीं ! जाइये, आराम कीजिये: और यह तलवार जिसका कब्जा दिलावर, बहादुर हाथों में रहना चाहिये, मुझे देते जाइये:–

मैं इसके घाट लाखों बेइमानों को उतारूँगी ।
सियह है इसका कब्जा, ख़ून में धोकर निखारूँगी ॥
खड़ी हो जाऊँगी मक़तल में और बढ़कर पुकारूँगी ।
कहाँ हो दुश्मनों आओ मैं हिम्मत न हारूँगी ॥

चलाओगे अगर तुम तीर तो मैं खंजर चलाऊँगी ।
सुनाओगे रजस गर तुम, तो मैं मरकब बढ़ाऊँगी ॥

ताहिर–सरताज़ मल्का !

आमरा–बस मैं कुछ नहीं सुनना चाहती । ताहिर ! अगर तुझको मेरे औलाद से कुछ भी मुहब्बत है, तो उठा ले इस बच्चे को और जल्द पहुंचादे अपनी बीवी जाँफ़ेजा के पास । अगर मैदान जंग में आमरा कत्ल हो जाय, तो फिर इस मासूम बच्चे की हिफ़ाज़त खुदा के हाथ या वफ़ादार ताहिर के हाथ ।

(आमरा का जाना)

ताहिर–दिल और जान के साथ । (मज़हर को लेकर चले जाना)

शाह– आ हा ! :—

दुख दर्द हो कैसाही ताअस्सुफ नहीं करता ।
सहता हूँ ज़माने के सितम उफ़ नहीं करता ॥

आमरा जोश गजब से मुज़तर होगई है, वाक़ई मुझ से बड़ी गलती होगई है । मगर खैर, आइन्दा जो पेश आयेगी, वह देखूँगा । इस वक्त तो मैदाने जंग में मैं भी अपनी प्यारी आमरा ही का साथ दूंगा । (जाना)

अंक पहिला । सीन छठवाँ ।

मैदाने जंग ।

(सैफ़ और मल्का आमरा दोनों की फ़ौजों का मुक़ाबला)

(आमरा का सैफ़ और उसके दोनों खुशामदी दोस्तों के साथ मर्दाना वार तलवार बाज़ी का जौहर दिखाना । बादशाह का भी फ़ौज लेकर मल्का आमरा की मदद के लिये पहुँचना । मल्का

का सैफ़ के कब्ज़े से निकल जाना और थोड़ी देर जंग व जदल होने के बाद खुद बादशाह का पस्त होकर गिरफ़ार होना। (टेबुल)

अंक पहिला। सीन सातवाँ।

रास्ता।

(मझूल और फक्कड़ का आना)।

फक्कड़–मगर आपको यक़ीन है कि, मिर्ज़ा झक्की के हाथ में आपही की तस्वीर थी?

मझूल–हाँ हाँ, मेरीही तस्वीर थी। और वही तस्वीर थी, जो मैंने तन्नाज़ को निशानी के तौर पर दी थी।

फक्कड़–जनाब, मैं फिर कहता हूँ कि, आप धोका खा रहे हैं. वह किसी और उल्लू के पट्ठे की तस्वीर होगी।

मझूल–अबे तो क्या मैं अन्धा हूँ, कि अपना फोटो नहीं पहिचान सकता?

फक्कड़–मगर सवाल यह है कि, आपकी तस्वीर मिर्ज़ा झक्की के हाथ आई, तो क्योंकर आई?

मझूल–यही सवाल तो मुझे भी मुतहय्यर करता है।

(तन्नाज न० २ के सहेली अजीब का आना)

अजीब–यह लो, तमाम दुनिया छान आई, और यह मूआ तो यहाँ खड़ा है; अरे फक्कड़!

फक्कड़–अरे मैं कुर्बान, तुम कहाँ आ निकली मेरी जान?

अजीब–तेरी जान गई चूल्हे में, बता तेरा आक़ा कहां है?

फक्कड़–मेरे आक़ा को देखना है, तो पहिले केराये पर आँखें माँग लो।

अजीब–तो क्या मेरे पास आँखें नहीं हैं?

फक्कड़–आँखें होतीं, तो गदहे से ऊँचा आदमी नज़र न

आता ? देख वह क्या खड़े हैं।

अजीब–सरकार, अजी सरकार ! बन्दगी।

मझ्ल–सलाम।

अजीब–(खुद से, बड़े बिगड़े हुये तीवर से जवाब दिया)

मझ्ल–क्यों, क्या है ?

अजीब–जनाब ! बेगम साहबा ने आपको यह पैग़ाम भेजा है

मझ्ल–नहीं, नहीं, मैं उसका पैग़ाम वैग़ाम नहीं सुनना चाहता। उससे जाके कहदो कि आज से मुहब्बत तमाम ऐसी बेवफा की दोस्ती को सात सलाम।

अजीब–बेवफ़ा, मेरी बेगम और बेवफ़ा !

मझ्ल–हाँ हाँ ! बेवफ़ा बेवफा ! मैं साबित कर दूंगा कि, वफादारी की दुनिया में उसका रोआं रोआँ गुनहगार है; फरेबी है, झूठी है, मक्कार है।

फक्कड़–अजी सरकार ! आजकल तो ज्यादा गर्मी भी नहीं पड़ती, फिर एकाएक आपके दिमाग़ को क्या हो गया है ?

मझ्ल–चुप, वर्ना तेरी बीवी का गुस्सा तेरे सर पर उतारूँगा, मारे क़मूचियों के उधेड़ डालूंगा।

फक्कड़–प्यारी ! उलटे पाँव चलदो, वर्ना यह काट खायेंगे।

(तन्नाज़ नं० २ का आना)

तन्नाज़ नं० २–मुरदार ! तू भी इन्हें ढूंढ़ने आई तो यहीं मर रही है ? (मझ्ल) प्यारे ! कैसा मिज़ाज है ?

मझ्ल–न बुरा है, न अच्छा है।

फक्कड़–जी हाँ, इनका मिज़ाज हॉफ बेक् अंडे की तरह आधा पक्का और आधा कच्चा है।

तन्नाज़ नं २–प्यारे ! आज इतनी रुखाई से क्यों पेश आते हो ?

मझ्ल–तन्नाज़ ! मैंने तुझे अपना फोटो दिया था ?

तन्नाज़ नं०२ – हाँ ।

मक़्बूल – वह कहाँ है ?

तन्नाज़ नं० २ – मेरे पास है ।

मक़्बूल – अच्छा तो मुझे दिखाओ ?

तन्नाज़ नं० २ – अभी लो (जेब में ढूँढ़ कर, खुद से) जेब में तस्वीर थी वह कहाँ गई !

मक़्बूल – क्या सोच रही हो निकालो ?

तन्नाज़ नं० २ – प्यारे वह तस्वीर तो ...

मक़्बूल – (फक्कड़ से) देखा फक्कड़, वही बात निकली न !

तन्नाज़ नं० २ – शायद मैं कहीं रखकर भूल गई, या किसी ने जेब से निकाल ली ।

मक़्बूल – किसी ने जेब से निकाला, या तूने मेरा फोटो किसी चाहनेवाले को दे डाला ।

तन्नाज़ नं० २ – शर्म करो, तुम मुझपर बोहतान लगाते हो

मक़्बूल – बोहतान ! कैसा बोहतान, मैंने अपनी आँखों से अपना फोटो दूसरे के पास देखा है ।

तन्नाज़ नं० २ – एक वफादार पर बेवफाई का इल्ज़ाम लगाना ?

मक़्बूल – यह त्रियाचरित्र किसी और को दिखाना ।

तन्नाज़ नं० २ – मेरे प्यारे !

मक़्बूल – चल हट किनारे ।

(मक़्बूल का गुस्से में जाना, उसके पीछे पीछे फक्कड़ का भी जाना तन्नाज़ नं० २ का अफसोस करके गाना और अजीब का समझाना)

गाना ।

इल्ज़ामों से मार तीर जान पर ।
ज़ख़्मी बना गये साँवरिया ॥ ज़ख़्मी०—
तुम ग़ैर के घर बैठ के दिल शाद करोगे,
हम कौन हैं साहब, हमें क्यों याद करोगे,

एक दिन वेसाल होगा उम्मीद वेसाल में।
आखिर मरेंगे रोक तुम्हारे ख्याल में॥

अजीब-धीर धरो ए प्यारी हमारी,
मुशकिल होगी आसान सब।
भोला है वहमी है, जानी वो पियरवा॥

(जाना।

अंक पहिला। सीन आठवाँ।

दरबार।

(सैफ का अपने खुशामदी दोस्तों के साथ तलवारें चमकाते हुए दरबार में नजर आना)

सैफ़-यही, बस यही:—

इसी फिरते हुए गुम्बद की खातिर क़िला तोड़ा है।
इसी के वास्ते खून मैंने लाखों का निचोड़ा है॥

खुदग़रज़--बस अब देर क्या है। कदम रंज़ा फरमाइये व तख्त मुज़य्यन पर रौनक अफ़रोज़ हो जाइये।

सैफ़-तुम खुश हो ?

बुलहवस-दिलोजान से।

सैफ़-मैं इसके लायक हूँ ?

खुदग़रज़-फ़तह हुई उसी वक्त से। (सहेलियों से) रामिशगरो शुरू करो कोई गाना, जिसमें हो मज़मूने जश्न शहाना।

(सहेलियों का नाच के साथ गाना। सैफ का तख्त पर रौनक अफरोज़ होना।)

गाना।

मिला है ताज शाहाना, दुरे शहवार मुबारक बाद।

प्यारी हम सब मिलकर गायें।
कहीं इसी के खातिर ख़ून भरी नदियाँ।
कहीं इसी के लियें लाखों फ़ौजें गाइयाँ ॥
सोहे तुझे यह ताज शाही,
क़ायम हो दायम हो सुख चैन पायेंरी ।
नाच हम दिखलायें शाहा को नाच हम ॥ मिला०

सैफ़—एक हक़दार का कब्ज़ा सारे घर पर ।

(बादशाह का पाबे जंजीर दाखिल होना)

शाह–जरीं ताज और एक जल्लाद के सर पर ?

सैफ–मलिकुल आदिल ।

शाह—हाँ, मलिकुल आदिल, जब तक तू शरीफुल नस्ल था, मैं तेरा बाप था ।

सैफ़—और अब ।

शाह—अब जिस रोज़ से तू ना ख़लफ होगया सिर्फ मलिकुल आदिल रहगया ।

सैफ–क्या खूब ! न सर झुकाना न शाहा सलाम करना, और दीवानों की तरह दुशनामियों से कलाम करना ।

शाह–क्या तुझे झुककर सलाम करूँ ?

सैफ़–बेशक ।

शाह–हरगिज़ नहीं:-

फँस के जंजीरों में भी हर तरह हूँ आराम में ।
जो है दाना वही रहते हैं हमेशा दाम में ॥
दाग़ लग जाता है इन बातों मे नंगो नाम में ।
सामने पत्थर के झुकना कुफ्र है इसलाम में ॥

सैफ़–जिस वक्त तुम इस तख़्ते सल्तनत पर रौनक़ अ...

रोज़ होते थे, और मैं दरबार में दाखिल होता था: तो शाही एक़बाल के सामने नंगी तलवार निकाल कर सलाम करता था। मगर क्या सबब कि आज उसी तख़्त पर बजाय तुम्हारे मैं हुक्मरां हूँ, और तुमने मुझे झुककर सलाम न किया?

शाह–इसलिये कि, न तो यह तख़्त अब वो तख़्त रहा, और न मेरे पास शाही तलवार है।

सैफ़–सिर्फ एक तलवार के न होने से पूरे सलाम को अधूरा कर दिया।

शाह–अधूरा तो अब यह पूरा तख़्तए सल्तनत होगया:–

उठ गया जिस दिन से साया मुनासिफ़ ज़ीजाह का।
एक मुजस्सिम क़हर नाज़िल होगया अल्लाह का॥
चीखता है आसमां, है दौर एक बदख्वाह का।
दर मुकफ्फिल होगया, अब मुन्सफ़ी की राह का॥
रोशनी से अब तो रोशन दहर पूरा हो चुका।
मेरे उठतेही जो था, सब कुछ अधूरा हो चुका॥

सैफ़–क्यों नहीं, क्यों नहीं! रुस्तम दुनिया से उठ गया तो ताकत नाबूद हो गई! हातिम मिट गया तो सखावत मिट गई! नौशेरवां मर गया तो मुन्सिफी मर गई और अब तुम मर जावोगे तो रहम कानून और मुहब्बत अधूरी हो जायगी?

शाह–हो जायगी और जरूर हो जायगी:–

रिआया ढाड़ें मारेगी, मेरी गुज़री हुकूमत पर।
ज़मीने सल्तनत, मातम करेगी, मेरी मय्यत पर॥
ज़माना देगा जब इस्पीच मेरी नेक खसलत पर।
बहायेंगे मेरे दुश्मन भी आँसू, मेरी सीरतपर॥

चढाने फूल आएंगे, हजारों लोग तुरबत पर ॥

खुदगरज़-आहिस्ता, ज़रा आहिस्ता ! इस क़द्र बेअदब न बनो। बादशाह होकर दरबार में आहिस्तगी से कलाम करो?

शाह-खामोश! बेइमान खुशामदियो ! जिस दरख्त के साये में रह कर बरसों गुलछर्रे उड़ा चुके हो अब उसको छोड़कर दूसरे के पनाह में चले गये। तो क्या पेश्तर वाले को कुल्हाड़ियाँ मार मार कर गिराना चाहते हो।

बुलहवस-जो दरख्त पुराना और खुश्क हो जाता है वह हमेशा काटकर फेंक दिया जाता है।

शाह-दूर बद्ज़ात, अगर ज्यादा हद्दे अदब से गुज़र जायगा तो गुस्ताख मुँह फौलादी सूइयों से सिलवा दिया जावेगा।

खुदगरज़-आलीजाह ! सैफ़ की हुकूमत में, हमारे मुँह को सिलवाने वाला हमें कोई नहीं नज़र आता।

शाह-रज़ील, खुशामदियों ! तुम्हारी इन्हीं खुशामादाना बातों ने इसके दिल पर सिक्का बिठा दिया है।

बुलहवस-सिक्का बिठा दिया है और हमेशा बैठा रहेगा।

सैफ-ग़मगुसार दोस्तो, बस करो ! जिन ज़हरीले सांपों के घर छिन गये हैं, वह अब तैश में आ आकर फुफकारें मार रहे हैं। उन्हें फुफकारें मारने दो उनकी किसी बात की परवाह न करो।

ज़हर से मुज़तर हुए हैं, क्यों न अब झुंझलायें सांप।
बाँबियों में भर गया पानी, कहाँ अब जांयें सांप॥
शाह-ग़म नहीं हमको तू अपनी फिक्र कर नादां बशर।
तेरी मरक़द में न आकर, एक दिन लहरायें साँप॥
सैफ-पांच फिट ऊंची ज़मीं में, क़ब्र होगी बादे मर्ग।

मुझको ग़मही क्या है, फिर नीचे अगर लहरायें सांप ॥
शाह–उठके पहुँचेंगे वहाँ भी, वह न छोड़ेंगे तुझे।
हो हवा पर तू मुअल्लक़, तो वहाँ चढ़ जायें सांप ॥
सैफ़–इस जगह तो ऐश करलूँ, बाद मुरदन हो सो हो।
ग़म नहीं मुझको वहाँ फिर, आके गर खा जायें सांप॥

शाह–ओ खुदा! ओ खुदा! ऐसे ज़ालिम बद्‌ज़बान को क्या तू नहीं देखता।

दर में हों दीवार में हों, छत में हों, गिर जायें सांप।
पत्थरों से लकड़ियों से बाहर सब आजायें सांप ॥
पर खाली हो ज़मीं का, हर जगह पर जायें सांप।
आग से, पानी से, ग़ारों से निकल कर आयें सांप ॥
या इलाही ऐसे बद्‌ बातिन को तो डस जायें सांप ॥

सैफ़–बस बस; आतशी दहन से आग बरसाते हुए जुमले न निकालो, ऐसा न हो कि यह गोश्त का लुथड़ा मौत आने से पेश्तर ही दहन से जुदा कर दिया जावे।

शाह–ग़म नहीं, ओ शरीफ़ बेटे, ग़म नहीं! तुझ जैसी औलाद खुदा किसी को न दे। मुझे कब यक़ीन था कि तू ऐसा नाख़लफ निकलेगा। मगर अफ़सोस जो नजूमियों ने कहा था वह आज पूरा हुआ।

सैफ़–नजूमियोंने क्या कहा था?

शाह–जिस वक्त तू पैदा हुआ था, रूये ज़मीन पर आंधी चल रही थी। अँधेरा होने के सबब से तमाम मुसाफिरों को राह नहीं नज़र पड़ती थी। बादल गरज रहे थे, बिजली चमक रही थी, ज़मीन में ज़लज़ले पैदा थे, पानी बरस रहा था, दुश्मनों के हाथ से हज़ारों बंदगाने खुदा के गलों पर ख़ंजर फिराये गये। दरोदीवार पर सुकूत छाया था, शाही

महेल डगमगा रहा था, सुबह को उठकर देखा तो ताज भी दहलीज़ के पास ठोकरों में पड़ा थाः—

गरज़े कि हर बशर को थे लाले पड़े हुए ।
रोते थे बच्चे बाले, घरों में खड़े हुये ॥
नाज़िल था एक कहेर, बलाके थे ज़ल्ज़ले ।
कहते थे सब नजूमी आमार बद हुए ॥
लेकिन यक़ीन न मैंने किया एक बात का ।
आया मगर ओ मामेन जो दिन था घात का ॥

सैफ़-घात का, बेशक घातका ! मगर किसने कर दिया, तुमने, तुमने ! ओ संगदिल बादशाह, जिस तरह अपने वक्त में किसी जुल्म के करने से बाज़ नहीं आते थे, उसी तरह आज मैं भी ख़ामोश न रहूँगा । जिस तरह नज़रे कैद की हालत में तुम्हारे अदना अदना मुलाज़िमों ने मुझे बेइज़्ज़त किया था, आज मैं भी अपने मुलाज़िमों से तुम्हें ज़लील कराऊँगा ।

शाह-ज़माना क्या कहेगा ?

सैफ-सल्तनत के लिये बाप को मार डाला, अच्छा किया और क्या किया ।

शाह—इस ख़ूनी जुर्म से ख़ुदा का कानून तुझे गुनाह-गार ठहरायेगा ?

सैफ-एक पत्थर जो रास्ते में हज़ारों बन्दे गान ख़ुदा के पांव तोड़ता है, किसी ने उठाकर फेंक दिया, तो कभी गुनह गार नहीं हो सकता ।

शाह-अगर ऐसा है तो मार डाल । बे रहम क़स्साब मैं भी अब मरने से नहीं डरता और तुझ जैसी नाख़लफ रज़ील औलाद से किसी बात की ख़्वाहिश नहीं रखताः-

जहालत की मस्ती का तू एक राग है।
तेरे हाथ में जुल्म की बाग है॥
जलाने को मेरे दर्बी आग है।
तू बेटा नहीं, आतशी नाग है॥

सैफ-यह मक्कोरेया से भरी हुई फरेब आमेज़ बातें अब मेरे दिल पर कुछ असर नहीं कर सकतीं:-

झुकालो सर कि मेरी आरज़ू का फ़सला ठहरे।
उठाई है बहुत ज़हमत अब कुछ उसका सिला ठहरे॥
खुदग़रज़ ? बहादे खून ! बुलहवस खेंच ले ज़बान !

(दोनों के हाथ से तलवार गिरना और काँपना)

क्यों ? क्या जुरअत नहीं पड़ती, तो लो मैं खुद ही इस बोदे पत्थर को तोड़ कर ऐश व आराम की शाह राह को साफ कर लेता हूँ (बादशाह को गोली मार देना, बादशाह का मर जाना) टेब्लो।

ड्राप

अंक दूसरा। सीन पहिला।

सैफ़ का महल।

(सैफ़ का मय खुशामदियों के, गुस्से की हालत में दाखिल होना)

सैफ़-मैं तुम्हारी हर एक राय को मानने के लिये तय्यार हूँ। मगर मेरे काबिल दोस्तो ! मज़हर हमारा क्या कर सकता है। जब ताज का देने वाला मारा गया तो वह पहिले मर गया ?

खुद ग़रज-जी नहीं ! सांप का बच्चा अगर ज़िन्दा रहे-

गा, तो एक रोज़ ज़रूर डँसेगा । उसको तो मार देना ही अच्छा है ।

बुलहवस-कांटे को अगर पांव से निकाल लेते हैं, फिर दुबारा किसी को न लगे; इसलिये उसे तोड़ डालते हैं ।

सैफ़-वाकई सलाह तो ठीक है, मगर तदबीर क्या करना चाहिये ?

खुदग़रज़—रहम और इंसाफ का ख्याल दिल से दूर ।

बुलहवस—तरक्क़ी के लिये बढ़ो, मज़हर को जल्द क़त्ल करो ।

सैफ़-मगर, क्या मैं किसी भी बात का लिहाज़ न करूँ ?

खुदग़रज़-जब बाप का न किया तो भाई क्या चीज़ है:-

अहले हवस को कब है, किसी बात का लेहाज़ ।
वे लोग मर मिटे, कि जिन्हें था बड़ा लेहाज़ ॥

सैफ़-इस दरोग मशविरे का अज़ाब किसके गर्दन पर होगा ।

बुलहवस-किसी के भी नहीं:-

सब के किस्से हैं ग़लत और हिकायात दरोग ।
इस ज़माने के बशरकी, है हर एक बात दरोग ॥
दोस्तों में भी नहीं रास्ती पाई जाती ।
बोलते रहते हैं अहबाब भी दिन रात दरोग ॥

सैफ़—आह, बाप का खून हुआ और अब भाई का भी होगा !

खुदग़रज़-उसका होना वाजिब है ।

बुल हवस-अगर आप ऐसे ही ख्याल रखियेगा तो दुश्मनों को फतह का मौक़ा मिलेगा। मुल्क छिन जायगा, तक़दीर रोती फिरेगी । किस्मत मुफलिसी की शक्ल दिखाएगी ।

दरिया परस्त, अब हैं न शम्सो कमर परस्त।
ज़र की हवस है सबको, ज़माना है ज़र परस्त॥
बद हों की नेक, अब तो हैं एक सां जहान में।
कोई बशर रहे न, जहां में बशर परस्त॥

सैफ़–ओ सितम, क़हर, यह फ़रेबी सुरंग हनोज़ हजारों की जानें लेगी, दगा बाजियों की बिछाई हुई बारूद ज़रूर सतहे ज़मीन को तोड़ निकलेगी। और मेरी हुकूमत तवारीखों में सदीओं तक, दगा के नाम से दर्ज़ की जायगी।

खुदग़रज़–आप इसका जरा ख्याल न कीजिये।

अब तो जहाँ में होरही है जा बजा दग़ा।
मक्कार क्या कि, करते हैं मर्दे खुदा दग़ा॥

सैफ़–बस, बस, मुझे मज़बूर होकर तुम्हारा कहना मानना पड़ेगा; सल्तनत के लिये जिस तरह बाप को तहे तेग़ किया है भाई को भी कत्ल करूँगा। जाओ, जाओ, वह कहाँ है, किस सर ज़मीन में जाकर छिपा है, तुम भी जुस्तजू करो और मैं भी तलाश में निकलता हूँ।

बहुत बेबाक होके, उसके भी सर को उतारूँगा।
मैं उसकी हड्डियों को पत्थरों पर देके मारूँगा॥
निगह पड़ते ही उसके हक़ में क़ातिल ज़हर समझोगी।
वह सर हाथों में होगा हाथ में तेगे़ दोदम होगी॥ (जाता है)

खुदग़रज़–(कहकहा लगाकर)

न सर रखता, न दिल रखता, न है फिक्रे सकीं रखता
बुलहवस–अजब बेदुम का उल्लू है, समझ कुछ भी नहीं रखता।

अंक दूसरा। सीन दूसरा।

मिर्जा झक्की का मकान।

(मक्खूल का आना)

मक्खूल-यही है, उस फोटो वाले का घर यही है। क्योंकि मैं ने इसी घर के दरवाज़े से उसको निकलते हुये देखा है। बस, उसके नौकर को बुलाता हूँ, रुपयों का लालच देकर, तमाम हाल उससे उगलवाता हूँ। (पुकारना) अरे कोई है, अरे इस घर के अन्दर कोई है। अरे कोई आदमी, जन, भूत, घोड़ा, गदहा, खच्चर, मच्छर, कुत्ता, बिल्ली, कोई है कि नहीं।

गब्बन-(अंदर से) अरे कौन चिल्ला रहा है।

मक्खूल-अबे लोमड़ी के बच्चे मान से बाहर आ, शेर तुझे बुला रहा है।

गब्बन-(आकर) यह कौन! क्या है जी।

मक्खूल-अबे जी के बच्चे! माश के पुतले की तरह ऐंठा हुआ क्या है। मैं एक मस्त हाथी हूं, डरता काँपता हुआ मेरे सामने आ। वरना पाँव पड़ गया तो चर चर होके रह जायगा।

गब्बन-(खुद से) कम्बख़्त साढ़े तीन इंच का तो आदमी है, और साढ़े तीन तीन गज़ की तो डींगें मारता है!

मक्खूल-इधर आ, और जो मैं पूछता हूँ, उसका घुटने टेक कर, हाथ जोड़ कर, सच सच और साफ जवाब दे।

गब्बन-(पास आकर, खुद से) खुदा खैर करे, इसके दिमाग़ में तो वहशत कलाबाज़ियां खा रही है।

मक्खूल-जल्दी बोल तेरा मालिक कौन मरदूद है?

गब्बन–इस शहर का रईस मिर्ज़ा झक्की।

मझूल–वह कहाँ मर गया है ?

गब्बन–जी मर नहीं गया है, वह जिन्दा है।

मझूल–जिन्दा है, यह तो मुझे भी मालूम है; मगर है कहाँ ?

गब्बन–बाहर गया है।

मझूल–आयेगा कब ?

गब्बन–आठ बजकर कल जितने बजे थे, उतनेही फिर बजेंगे तब।

मझूल–अच्छा देख ! मैं तुझ से चंद सवाल पूछता हूँ. अगर तूने माकूल तरीके से जवाब दिया तो मैं अभी और इसी जगह तुझे पचास रुपये नक़द इनाम दूँगा।

गब्बन–(खुद से) या खुदा, पचास रुपये ! (ज़ाहरा) मगर मेहरबान, वह पचास रुपये सब के सब एक मुश्त दे दोगे; या थोड़े थोड़े करके ?

मझूल–नहीं एक मुश्त।

गब्बन–फिर तो मुझ में और एक रईस में इतना ही फ़र्क रह जायगा, जितना घोड़े और गदहे में रहता है।

मझूल–देख यह पचास रुपये रखे हैं। (सामने रुपये निकाल कर रख देता है)।

गब्बन–(खुद से) ओ मेरी माँ।

मझूल–सुन ! अगर तू मेरे सवालों का जवाब बराबर देगा, तो हर एक सच्चे जवाब के साथ, इन पचास रुपयों में दस दस का और इज़ाफ़ह होता जायगा।

गब्बन–(खुद से) ओ मेरे बाप के दादा, मेरी खुलती हुई क़िस्मत को देखकर फ़टी हुई क़ब्र से बाहर निकल आ !

मभ्रूल–और अगर भूठ बोलेगा, तो हर एक भूठे जवाब पर दस दस रुपया वापस लिया जायगा। बोल मंजूर ?

गब्बन–मंजूर।

मभ्रूल–अच्छा, तो चल तैयार हो जा, और अव्वल से आखिर तक मिर्जा भक्की और तन्नाज का हाल सुना ?

गब्बन–मिर्ज़ा भक्की और तन्नाज का हाल !

मभ्रूल–हाँ ! और ठीक ठीक, सच सच ! बस, पहले रुपये देख, और पेट में से बात उगलना शुरू कर।

गब्बन–(खुद से) हत्त तेरी क़िस्मत की ऐसी तैसी ! कम्बख्त ने बात भी वह पूछी जो मुझे मालूम नहीं। खैर मैंने अपनी प्यारी नवेली के मुँह से जो सुना है, कह डालता हूँ। (मभ्रूल से) हाँ सुनो, सोता संसार, जागता पाक परवरदिगार। कान की सुनी कहते हैं, आंख की देखी नहीं कहते। एक था बादशाह हमारा तुम्हारा, उस बादशाह के मुल्क में एक औरत और मर्द रहते थे, जो पचास रुपये पर बिलकुल सस्ते थे।

मभ्रूल–अबे साफ बोल, उस, औरत का नाम क्या था ?

गब्बन–तन्नाज।

मभ्रूल–बराबर, तेरी ज़बान की सचाई और साफ गोई की मैं दाद देता हूँ। और पचास पर दस रखकर, और इज़ाफ़ह कर देता हूँ।

गब्बन–(खुद से) वाह वाह पचास के साठ तो हुये।

मभ्रूल–अच्छा फिर क्या हुआ ?

गब्बन–फिर तमाम आशिक उसके इम्तेहान में नापास हुये। सिर्फ मेरा आका मिर्जा भक्की पास हुआ।

मभ्रूल–बेशक, ले यह मैंने दस का और इजाफ़ाह कर दिया।

गब्बन–(खुद से) पचास में मिले दस तो हुये साठ, और

साठ में मिले दस तो कितने हुये ? हुये होंगे जी, कुछ ज्यादा ही हुये होंगे।

मभूल-अच्छा फिर क्या हुआ ?

गब्बन-फिर ऐरे, गैरे, नत्थू, खैरे, आशिकों को तो झाड़ पड़ी और तन्नाज़ मेरे मालिक के दामे मोहब्बत में फँस कर फड़फड़ाने लगी।

मभूल-और क्या करने लगी ?

गब्बन-वह मैं जानता नहीं।

मभूल-नहीं जानता ! अच्छा इस बात के जवाब से तूने इनकार किया, मैंने दस रुपये वापस उठालिया।

गब्बन-अरे नहीं, नहीं, इश्क में गिरफ्तार होकर प्यार मोहब्बत करने लगी और क्या।

मभूल-अच्छा फिर इसके आगे ?

गब्बन-इसके आगे मुझे नहीं मालूम।

मभूल-नहीं मालूम, जवाब से इनकार ! ले यह दस का पासा फिर उठ गया।

गब्बन-(खुद से) लाहौल विलाकुवत। (जाहिरा) अरे जनाब इसमें रुपये डाल रहे हो, या उलटा निकाल रहे हो। रख दो, रखदो, खोदा के लिये यह दस तो न उठाओ।

मभूल-चुप।

गब्बन-अरे पर मैं याद करके जवाब देता हूँ, तुम मुझे सोचने का तो वक्त दो। (सोच कर) हाँ याद आया, वह इश्क़ में गिरफ्तार होने के बाद एक दूसरे से खफ़ा हो गये।

मभूल-फिर झूठ बोला, यह दस और कम हो गये।

गब्बन-(खुद से) हाय हाय क्या करूँ गुस्सा तो ऐसा आता है कि, इसकी छाती पर चढ़कर खून पीलूँ (जाहिरा)

सुनिये हज़रत ! फिर दोनों ने मेल कर लिया, और रात दिन खोपिया मुलाक़ातें होने लगीं।

मक़्बूल–बराबर, यह देख, सच बोलने से फौरन दस रुपये बढ़ गये। अच्छा अब यह बतला कि उनकी प्राइवेट मुलाकात कहाँ होती है ?

ग़ब्बन–कभी मकान में, कभी दालान में, कभी सायबान में, कभी क़ब्रस्तान में।

मक़्बूल–अच्छा बोल, उसने मोहब्बत का पहिला बोसा कहाँ से लिया।

ग़ब्बन–(खुद से) कम्बख़्त, अजब तरह का सवाल करता है, अब मैं न बोलूं तो फिर दस रुपये का नोट उठालेगा। (जाहिरा) जनाब ! मोहब्बत का पहिला बोसा उस वक्त लिया; जब कि काज़ी के घर में निकाह हो रहा था।

मक़्बूल–हैं ! क्या उन दोनों ने आपस में शादी भी करली ? पाजी तेरा हर एक जुमला दरोग़ गोई से भरा है ?

गब्बन–अरे, पर, ग़ैरों का गुस्सा मेरे उपर क्यों निकाला जाता है।

मक़्बूल–तू बिल्कुल नालायक है, कमीना है, रुपये क्या एक पैसे की क़ीमत का नहीं है ! (रुपये उठाकर जेब में रखना)

ग़ब्बन–अरे भाई में कुछ सही, मगर रुपये उठाकर क्यों जेब में रख लेते हो !

मक़्बूल–चुप, तू मुझे धोका देता है, रुपये एंठने को झूठा इज़हार देता है।

ग़ब्बन–(खुद से) मारडाला ! मारडाला ! (जाहिरा) अरे ज़रा तो इन्साफ से काम लो, सब नहीं तो आधे रुपये तो छोड़ दो।

मभूल–चुप।

गब्बन–(खुद से) ओ बाप रे मर गया। (जाहिरा) अरे साहब, फुसला फुसला कर सारा हाल पूछ लिया, अब इस क़दर तो जुल्म न करो. दस रुपये बाक़ी रह गये हैं. यही इनायत करो।

मभूल–चुप! रुपये लेने के लिये मुँह धोकर आ (सब रुपये समेटकर जेब में रखता है: दूसरी तरफ से मिर्ज़ा झक्की आता है)

मिर्ज़ाझक्की–(खुद से) हैं यह कौन! आहा यह तो वही तस्वीर वाला (जाहिरा) क्यों रे मरदूद, तू यहाँ क्यों आया है?

मभूल–तन्नाज़ की हक़ीकत सुनने।

मिर्ज़ा झक्की–तन्नाज की हक़ीकत सुनने वाला तू कौन!

मभूल–उसका आशिक़।

मिर्ज़ा झक्की–तू क्या बकता है, तन्नाज़ मेरी है।

मभूल–तू झक मारता है, तन्नाज़ मेरी है।

मिर्ज़ा झक्की-पाजी कमीने ज्यादा ज़ोर न दिखा।

मभूल–बुढ़े गुलमीट्ठू, तू भी बड़बड़ न लगा।

मिर्ज़ा झक्की–मैं तेरा सर तोड़ दूँगा।

मभूल–और मैं तुझे कच्चाही खा जाऊँगा।

मिर्ज़ाझक्की- आइयो डैम फ़ूल! देख मुझे अंग्रेजी में गुस्सा आ रहा है।

मभूल-मन हाथी हस्तम्, अगर मन् जंग मीं कुनम्, सोटांमी ज़नंम्। देख मुझे फारसी में गुस्सा आरहा है।

मिर्ज़ा झक्की–मार, मार, सरदे टूटे, मीनो पंजाबी दे बबह गुस्सा आविन्दा है।

मिर्ज़ा झक्की–अच्छा, बहादुर का बच्चा है, तो खड़ा रह, मैं मुहल्ले वालों को बुलाकर लाता हूँ, और नाक के रास्ते

तेरा भेजा बहाता हूँ।

मझूल-अबे कमीने मुरदार तू कहाँ जाता है।

(मिर्जा झक्की का मुहल्ले वालों को बुलाने जाना, पीछे उसके मझूल का भी जाना। गब्बन का यह सब झगड़ा देख कर दोनो पर नफ़रत करना और गाना।

गब्बन-यह सब गड़बड़ी हैं बड़बड़ी जंगली लंगूर,
एक पूरा खब्ती दूसरा वहशी ज़टल बेशऊर,
शक्की झक्की गरजन बादल, दोनोंही धोंधल बन गये
पागल, है सारा घर मग़रूर ॥ यह०—

(जाना)

अंक दूसरा। सीन तीसरा।

ताहिर का मकान।

(जाँफ़िज़ा का अफ़सोस की हालत में गाते हुए नज़र आना ताहिर का मज़हर को लेकर आना)

जाँफ़िज़ा—

गाना।

अब आवत याद पिया दिन रात ॥ अब०—
दिल पर बिरहा की सोच रहत है।
काहे न आयो बिदेशी नाथ ॥
ज्ञान ध्यान मेरो फुरकत छीनत काहे न आयो ॥ अब०—

ताहिर-बला का तूफ़ान, अल्लमान्, अल्लमान् ऐ क़ादिरे सुभान, बस तूही है ग़रीबों का निगहबान।

जाँफ़िज़ा-मगर आप इस क़दर घबरा क्यों रहे हैं?

ताहिर-इसलिये कि सख्त ज़ालिम जल्लाद से आकर मुकाबिला पड़ा है। और देखो यह बच्चा (मज़हर को देखाना)

जाँफ़िज़ा-हैं कौन मज़हर !

ताहिर-हाँ, मज़हर। प्यारी जाँफ़िज़ा अगर यह हमारी हिफाज़त से जाता रहा तो समझ लो कि हमेशा के लिये इस-की शामे ज़िन्दगी का सवेरा होगया।

जाँफ़िज़ा-मैं जान से ज्यादा अज़ीज़ समझ कर इसको अपनी हिफ़ाज़त में रक्खूँगी।

ताहिर-बस अगर तुम मेरी शरीफ़ बीबी हो तो खाविंद के फरमान का तामील करना, ख्वाह अपनी जान दे देना। मगर मेरी गैरहाजिरी में सैफ़ के हाथ में इस मासूम मज़हर को हरगिज़ जाने न देना, खुदा हाफिज़। (दोनों का)

गाना।

ताहिर-बाकी आस न छोड़िये राखो मन को मार।
दुख से मुख मत मोड़ियो निर्गुन है करतार ॥
देगा रिहाई बारी न कर जान ऐसी बेकरारी, मान मान-
जाँफ़िज़ा-तन से मन से मैं बलहारी।
तुझ पर हूँ मैं जान जान।
धीर धरो सइयाँ।
तुम पर मैं बल बल जइयाँ ॥
ताहिर-कर न ज़ारी इज़्तेरारी।
होगी सारी मुश्किलें आसान जान ॥
दिल में अब न घबराना
निगहबान तेरा होगा सुभान ॥

जाँफ़िज़ा-मेरे लायक शौहर खुदा निगहबान। (ताहिर)

का जाना) प्यारे मज़हर, शाही महलों में रहने के एवज कुदरत ने तुझे सहराई घास फूस के झोपड़ी में परवरिश पाने के लिये रवाना कर दिया, मगर अफ़सोस जो आराम तुझे वहाँ मिल सकता था यहाँ नहीं मिल सकता। लेकिन हाँ फिर भी अगर शहर वालों के बाग़ इन्सानी हिकमतों से तरतीब पाये हैं तो यहाँ के चमने दिल कुशाह ख़ास उस बाग़ बाने अजली के सवांरे हुए हैं, इसलिये वहाँ के राहत से यहाँ की राहत भी तेरे हक़ में हर तरह बाइसे फरहत होगी।

शाम को आवाज़ चश्मों की सुलायेगी तुझे।
सुबह ख़्वाबे नाज़ में कोयल जगायेगी तुझे॥
बेकसी आगोश गुरबत में खिलायेगी तुझे।
फुरकते मादर में गिरियां जबांकि पायेगी तुझे॥
तेरी लौंडी गोद में झूला झुलायेगी तुझे।

(मजहर को झूला झुलाना और गाना)

गाना।

मैं झूला झुलाऊँ तुझे प्यारे हमारे।
है अबतर हाल तेरा बाले हमारे॥
छोड़ महल देखी टूटी झोपड़िया।
यहां मुहाफ़िज है तेरा खुदा॥
बचाले जानोजर ए मालिक सुभान।
अदू है सब जहान॥
है बेकस ये बेबस, फरियादरस बेचारा॥ मैं झूला०

(मज़हर का घर में जाना; खुशामदियों का सैफ़ को मकान बताकर छिपना और सैफ़ का घर में कदम रखना।)

सैफ़--(खुद से) इस वक्त मेरे बर्क रफ़ार घोड़े की तेज़ क़दमी ने बाद सर सर को भी पसे पुश्त छोड़ दिया है। इज़तराब और जोशे बेखुदी के शौक़ ने आन की आनमें मंज़िले मक़सूद को क़दमों के नीचे पहुँचा दिया है। जिस शीर ख्वार बच्चे के कच्चे सर को तोड़कर मैं अपने रूह को खुशखबरी का पैग़ाम पहुंचाऊँगा वह इसी घर में मौज़ूद है। (ज़ाहिरा) जाँफ़िज़ा, जाँफ़िज़ा, मज़हर कहाँ है।

जाँफ़िज़ा—यह मुझे मालूम नहीं।

सईद—(जाँफ़िज़ा का लड़का) मालूम क्यों नहीं अब्बा अभी अभी तो लाये हैं।

सैफ़--जाँफ़िज़ा झूठ क्यों बोलती है। नाहिर मज़हर को अभी छोड़ कर गया है।

जाँफ़िज़ा--बिल् फ़र्ज मेरे पास हो भी तो क्या मुझसे कोई ले सकता है।

सैफ़--मैं ले सकता हूँ।

जाँफ़िज़ा—तुम उसको लेकर क्या करोगे ?

सैफ़--मैं उसका सर कुचल डालूँगा।

जाँफ़िज़ा--मगर उसने तुम्हारा बिगाड़ा क्या है ?

सैफ़--वह मेरे हक़ में एक ज़हरी अज़दहा है।

जाँफ़िज़ा--खौफ़े खुदा करो, खौफ़ खुदा करो। भाई को ज़िब्ह करने से बाज़ आओ।

सैफ़—जब बाप को कब्र का लुकमा बना दिया तो फिर भाई क्या चीज़ है।

जाँफ़िज़ा--ओ खुदा ! क्या बादशाह को भी कब्र में सुला दिया। अफ़सोस।

भरे हैं बुराई के तूफान दिल में।

बदी की, न नेकी की, पहिचान दिल में ॥
अदावत का है जोश हरआन दिल में।
बसा इसके ऐसा है शैतान दिल में।
न खौफ़ खुदा है न ईमान दिल में ॥

सैफ़-है नेकी बदी की भी पहिचान सब कुछ।
मुहब्बत मुरव्वत का है ध्यान सब कुछ ॥
लयाकत शराफ़त की है शान सब कुछ।
है खौफ़ खुदा भी और ईमान सब कुछ ॥

जाँफ़िज़ा—तू झूठा है।
जो मुनाफ़ी में फिर गया मुल्तां कहाँ रहा।
जिस में नहीं है उन्स वह इन्सां कहाँ रहा ॥
जो करके कह दिया, कहा एहसां कहाँ रहा।
नीयत हुई खराब तो ईमां कहाँ रहा ॥

सैफ़—न रहे, न रहे, मेरी बला से खौफ़े खुदा रुखसत हो जाये, मेरी राहत के सदके से।

कोह के दामन में लेकर मुद्दआ फिरता है यह।
ख्वाहिशे इशरत के खातिर जा बजा फिरता है यह ॥
कोर बातिन कोर दिल अन्धा बना फिरता है यह।
जिस गले पर फिर गया शक्ले कज़ा फिरता है यह ॥
कान कुछ रखता नहीं जो मायले फरियाद हो।
नूर आँखों में नहीं कि देख कर नाशाद हो ॥

सईद-हाय, अम्मा, अम्मा। (सईद को पकड़ लेता है)
हमीदा-(जाँफ़िज़ा- की बेटी) अल्लाह करे यह मर जाये।
सईद-अब्बा जान भी खुदा जाने कहाँ चले गये।

(बच्चों का घबराये हुए फिरना)

जाँफ़िज़ा—मार मार वार करने से बाज़ न आ। एक बेवकूफ़ की तरह मौके पर चूक न जा।

कायम न हमेशा सितम आम रहेगा।
बाकी न सदा राहत व आराम रहेगा॥
गर मौत का फेरा सुबहो शाम रहेगा।
एक रोज़ फना होके यह अंजाम रहेगा॥
बाकी फ़कत अल्लाह का एक नाम रहेगा॥

(सईद और हमीदा का दरख्तों का डालियां तोड़ तोड़ कर सैफ को मारना, सैफ का उन्हें उठा कर फेंक देना।)

सैफ़—बेहया कमीने रज़ील क्या तुम में भी इस कदर जुरअत पैदा होगई।

सईद—क्यों नहीं। आख़िर तो शरीफ़ माँ के दूध से परवरिश पाया हूँ।

सैफ़—सच है। नागिन का बच्चा ज़हरही उगला करता है। (पिस्तौल दिखाना)

जाँफ़िज़ा—नहीं, नहीं, खुदा के लिये इन नन्हे बच्चों को दुनिया में कुछ रोज़ जीने दे।

पिला इतना न पानी अपनी तेग़ जुल्मरानी को।
कि जाय रूह दुनिया से तरसती इनकी, पानी को॥
बहुत उम्मीदें दुनिया है, अभी नख्ले जवानी को।
न कर ज़ालिम अभी से गुल चिराग़ें जिन्दगानी को॥

सैफ़—अगर तेरे दिल में मादरी मुहब्बत जोश खाती है तो मज़हर को मेरे हवाले करदे मैं इन दोनों के क़त्ल से हाथ उठा लेता हूँ।

जाँफ़िज़ा—नहीं, नहीं, इनके फ़ैसले को ज़बान पर खतम कर और मज़हर के क़त्ल पर रहम कर।

सैफ़-मेरे खूनी अज़्म के शोर में तेरी फरियाद सुनाई नहीं देती।

जाँफ़िज़ा-कानों को मुख़ातिब कर।

सैफ़-बहरे हो गये हैं।

जाँफ़िज़ा-अक़्ल से काम ले।

सैफ़-वह आमादा है क़त्ल के लिये।

जाँफ़िज़ा-आँखें खोल ?

सैफ़-खूनी होगई हैं।

जाँफ़िज़ा-ख़ौफ़े ख़ुदा कर ?

सैफ़-यह नसीहत किसी और को कर।

जाँफ़िज़ा-मैं तेरे सामने सर झुकाती हूँ।

सैफ़-मैं तुझे मक्कार समझता हूँ।

जाँफ़िज़ा-बेईमान-बुजदिल, बेरहम, मार डाल जिबह कर डाल, मैं भी उस ख़ाक सारी को कि जिसकी इज़्ज़त ख़ुदा की बारगाह में हज़ार इबादत से बढ़कर है अब तुझ जैसे ना कद्र के सामने कभी पेश न करूँगी। जाव बेटा जाव, अपने शाहज़ादे की जिन्दगी के बदले में मरने से क़दम पीछे न हटाओ। खुशी के साथ क़त्ल हो जाओ।

सईद-अम्मा जान, मरते वक्त मेरी ख्वाहिश है अगर क़बूल फरमाओ।

जाँफ़िज़ा-कहो बेटा जल्दी कहो।

सईद-बस यही कि जिस तरह मैं तुमारे फरमान पर अपनी जान देने को तैयार हूँ। उसी तरह तुम भी अब्बा जान के हुक्म को न टालना मर जाना ख़ाक हो जाना, मगर जब तक दम में दम बाकी है, भाई मज़हर को इस क़ातिल के हाथ में कभी न देना।

जाँफ़िज़ा—मरहबा आफ़रीन।

सैफ़—जज़ाक अल्लाह, तहसीन।

(सईद और हमीदा दोनों को पिस्तौल से मारना)

जाँफ़िज़ा—ओफ़-खून बेदाद गरी, सितम। ज़ालिम संग-दिल, इन बेगुनाहों का बदला सिवाय कब्र या दोज़ख के और किसी जगह नहीं मिल सकता। शुक्र करती हूँ कि वह बच्चा जिसके हिफ़ाज़त के लिये मेरे प्यारे खाविन्द का फ़रमान था अभी तक तुझ ज़ालिम के हाथ नहीं पहुँचा।

बला से मर गये बच्चे नहीं मैं पीटती छाती।
मैं खुद मरने पर राजी हूँ नहीं मदमों से घबराती॥
मेरा कुछ बस नहीं चलता जो चलता तो यह दिखलाती।
कि इस मासूम बच्चे पर फ़िदा हर तरह हो जाती॥
जो होते सैकड़ों बच्चे तो सब कुरबान कर जाती॥

सैफ़—ग़म न कर, ग़म न कर; अब भी बहुत कुछ मौक़ा है तेरा नहीं तो मेरा अरमान ज़रूर पूरा हो सकता है।

जाँफ़िज़ा—क्या इस क़दर ज़ुल्म करके भी कुछ हसरत बाकी है।

सैफ़—हाँ: अभी तो मेरी खुशी के आगे तू एक दीवार बाकी है।

जाँफ़िज़ा—कर गुज़र, कर गुज़र; बेईमान खूनी, तुझसे जो कुछ हो सके कर गुज़र।

सैफ़—(मुंह दबा के) बस. बस अब बोल उसको मेरे हवाले करती है या नहीं।

जाँफ़िज़ा—हरगिज़ नहीं और कभी नहीं।

तेरे खूनी सितमगर से अगर हो एक जहाँ पैदा।
फिर हरएक क़तरे खून से हों सौ सौ ज़ुल्म रां पैदा।

जफ़ा की हों नई राहें नया हो आसमाँ पैदा।
नई तेग़, नये क़ब्ज़, नये तीरो कमां पैदा!
नहीं मुमकिन कि तेरा फिर भी पूरा मुद्दआ होगा।
अगर मैं मरगई तो इसका हामी खुद खुदा होगा।

सैफ़--बस, बस। अब जोश, कीना, ग़ज़ब क़हर, दुनिया भर की कूवतें एक जाजमा हो कर मेरे दिमाग़ को चक्कर में ला रही हैं। जाँफ़िज़ाँ, जाँफ़िज़ा: तू भी मरने को तैयार होजा।

जाँफ़िज़ा--खुशी के साथ। अगर दुनिया तुम्हीं जैसे बदकारों के लिये जाये सुकूनत है तो नेकों को एक लहमा भी यहाँ क़याम करना क़यामत है।

रूह बेकल है मेरी, जन्नत में जाने के लिये।
शौक़ जल्दी कर रहा है जां गवाने के लिये॥

सैफ़-मौत क़ासिद बनके आई है बुलाने के लिये।
ले न कर वक़फ़ा तू जा आराम पाने के लिये॥

(पिस्तौल से मार देता है)

बस मैदान साफ़ होगया। अब मेरे शिकार के आड़े आने वाला कोई न रहा (मज़हर को तलाश करके लाना और उससे कहना) ओ शैतान के बच्चे, तेरी एक जान के लिये मुझे किस क़द्र रंज उठाना पड़ा।

मज़हर-हाय, ओ खुदा क्या दुनिया में वो वक्त, आगया कि भाई भाई का दुश्मन होगया। अफ़सोस।

आलमे तिफ़ली में हंगामए फ़रियाद आया।
अभी कुछ जीने न पाये थे कि जल्लाद आया॥

ज़म ज़मा किसकी ज़बाँ पर दिले नाशाद आया।
मुँह न खोला था कि पर बाँधने सैयाद आया॥

सैफ़-जईफ़ों का हमेशा ख़ातिमा फ़िल् फ़ौर होता है।
मगर बच्चा जवानी पाके लायके जोर होता है॥
जहाँ में दिन बदिन पैदा नया एक तौर होता है।
पुराने झाड़पर जब कि कज़ा का दौर होता है॥
जो बाकी बीज रहने से दरख्त एक और होता है।

मज़हर-मगर भाई मुझे मारने से तुम्हें क्या मिलेगा?

सैफ़-सल्तनत, हुकूमत, बादशाहत।

मज़हर-वह तुम्हें मिल चुकी है?

सैफ़-मिल चुकी है, मगर तेरे जिन्दगी के बाइस अभी तक कई बातों की दहशत लगी हुई है।

मज़हर-क्या मेरी दहशत।

सैफ़-हाँ! तेरी दहशत।

मज़हर-मेरी दहशत न करो। बल्कि जिसने सबके दिल में दहशत पैदा की है। उस ख़ुदा की दहशत का खौफ़ करो।

ज़ुल्म की ताक़त पर ज़ालिम इस कदर गर्रा न कर।
एक दिन मिट जायगा अल्लाह से ठट्ठा न कर॥
ख़ानदाने तुर्क को तारीख़ में रुसवा न कर।
मैं तेरा भाई हूँ, भाई भाई पर गुस्सा न कर॥

सैफ़-बस ख़ामोश, बोल तेरी हस्ती नापाक को किस तरह मिटाऊँ। पत्थर के चट्टानों पर दे मारूँ। या घोड़े के टापों से रौंदवाऊँ। कोल्हू में पिलवाऊँ, या यह बेरम, आतशी नाग के फुफकार से रूह को अजल का निशाना बनाऊँ। बोल, बोल, क्यों नहीं बोलता। (सैफ़

का मारना चाहना, ताहिर का आकर फेर करना सैफ के हाथ पर गोली लगना मज़हर का छूट जाना, आमना का मजहर को लेकर फरार होना और ताहिर का गिरफ्तार होजाना) आह गोली का वार कारी लगा हाथ बेकार होगया।

(टेब्लो)

अंक दूसरा। सीन चौथा।

रास्ता।

(अजीब के साथ तन्नाज नं० २ का खत पढ़ते हुये आना)

तन्नाज नं० २-यह खत है या कलेजे के टुकड़े कर देने वाली छुरी है। मूये रोनी सूरत वाले ने मुझे उलझन में डाल दिया। (रोती है)

अजीब-बानू साहबा, आप तो नाहक रोती हैं। अगर खत बुरा मालूम होता है, तो मूये को आग में फेंक दो।

तन्नाज नं०२-आग में फेंक दूँ! नहीं नहीं, इसको तो उसकी बेवफाई के सबूत के लिये पास रक्खूँगी। तूही बता भला, ऐसा दिल तोड़ने वाला ख़त मक़्बूल को लिखना लाजिम था?

अजीब-बीबी मियाँ तो मियाँ, उस मूये तीन टके के नफर फक्कड़ को तो देखिये, जब तक मैंने मुँह नहीं लगाया था तो पालतू कुत्ते की तरह, दुम हिलाता मेरे पीछे फिरा करता था, और अब मैंने यह समझकर कि कहीं मेरी मुहब्बत में ज़हर वहर न खाले, उसे अपने कदमों के पास बैठने की जगह दे दी तो गुर्राने लगा, मुझे भी ख़त लिख लिख कर धमकाने लगा।

तन्नाज नं०२-मैं तो अब मक़्बूल से ज़रा भी इल्तिफात न करूँगी।

अजीब-और मैं कब उस निगोड़ मारे से बात करूँगी ।

(मझूल और फक्कड़ का आना)

मझूल-(खुदसे) हाय, हाय, यह मुहब्बत कैसी ।

फक्कड़-हत तेरे दिलकी ऐसी तैसी ।

मझूल-लाख लाख दिलको समझाया ।

फक्कड़-मगर आपको उस सुनहरी बत्तख़ और मुझे उस कुड़ुक मुर्ग़ी का ख्याल इस दर पै खींच लाया ।

मझूल-मगर देख फक्कड़, झख मारने को तो आगये हैं, मगर जब तक यह दोनों न झूकें, अपने तेवर भी तने रहें ।

फक्कड़-बेशक इन मोछों की इज्जत तो रहही है, ये अकड़-फूँ दिखायें तो हम भी तीसमार खां बन जांये ।

अजीब-बीबी वह दोनों बुलाने अब आगये हैं, अपनी हेठी न होने पायें ।

तन्नाज़ नं०२-तौबा कर बन्दी, वह रूखाई दिखाऊँ, ऐसी नाक रगड़वाऊँ कि देखने वालों को मज़ा आ जाये ।

(मझूल का तन्नाज़ को सुनाकर गाना)

गाना ।

मझूल-ज़रा नैनों मे नैना मिलाये जाव,
मेरी जान नैनों मे नैना मिलाये जाव ।
आशिक़ को कैसे लगाते गले हैं,
हमको भी जानी बताये जाव ॥ ज़रा०—

(तन्नाज़ का मझूल को सुनाकर उसका जवाब गाने में देना)

गाना ।

तन्नाज़ नं०२-अजी हम दिल ना किसी मे लगायेगें ।
नाहक न मदमें उठायेगें ॥

आज जिनकी आंखों में जादू भरा है,
कल वही आंखें दिखायेंगे ॥ अजी०—

फक्कड़-(मझूल से) हजरत अलग हटिये, आप के इश्क के अंजन का बैलर तो फट गया और सारी भाप निकल गई । अब ज़रा मुझे अपनी स्टीम तेज़ कर लेने दीजिये । (अजीब को सुनाकर गाता है)

गाना ।

आवो आवो नगरिया हमारी रे । आवो०—
एक बोसा हमने माँगा वाह मौला वाह जी,
फूटे मुँह से यह न निकला लेते जाओ शाह जी,
बीती जाती उमिरिया हमारी रे ॥ आओ०—

(अजीब फक्कड़ के जवाब में सुनाकर गाती है)

गाना ।

अजीब-नहीं आओ डगरिया हमारी रे ॥ नहीं०—
चल दिये उस फन के पक्के और कच्चे रह गये,
मर गये आशिक फकृत उल्लू के बच्चे रहगये,
उड़ उड़ नगरिया हमारी रे ॥ नहीं०—

फक्कड़-(मझूल से) अजी जनाब, यह तो वैसेही जूते का जवाब डॉसन बूट से दे रही है ।

मझूल-अच्छा अब नज़्म में गाना छोड़ नसर में रोना शुरू कर ।

फक्कड़-अरी मग़रूरो देखते नहीं हो कि कुतुब साहब की लाठ की तरह कब से जमे खड़े हैं ।

मझूल-क्या अंधेर है, इतने बड़े इज्जतदारों को कोई पूछता नहीं, चार चार आँखें होकर भी आदमी को सूझता नहीं ।

तन्नाज नं० २-खूब ! मुझे आज मालूम हुआ कि तुम आदमी हो। वर्ना मैं तो अभी तक इन्सान नुमाँ जानवर जानती थी। बस ज्यादा दिमाग न खाइये. यहाँ से तशरीफ ले जाइये।

अजीब--जिन पैरों से आये हो उन्हीं पैरों से वापस लौट जाइये।

मक़बूल-अच्छा, अच्छा चले जाते हैं, मगर जो कहने आये हैं वह तो सुनो।

तन्नाज नं २-अच्छा कहो।

मक़बूल-मैं यह कहने आया हूँ कि मैंने आज से तुम्हारी मुहब्बत को ताक किया।

तन्नाज नं० २-और मैंने भी आज से तुम्हारी मुहब्बत को तिलाक़ दिया।

फक्कड़-लीजिये हजरत उनकी मुहब्बत यतीम, और आप की मुहब्बत बेवा होगई।

मक़बूल—(तन्नाज से) अगर तुमको ऐसा ही बरताव करना मंजूर था तो पेशतरही मेरी मुहब्बत से इन्कार क्यों नहीं किया।

तन्नाज नं० २-जब तुम जानते थे, कि मेरी मुहब्बत की क्रिस्टन् लाइट बगैर तुम्हारे इश्क का झोपड़ा अँधेरा रहेगा, तो फिर यह रंज भरा ख़त किस बिरते पर लिखा था।

मक़बूल-इन चिकनी चोपड़ी बातों से मेरा दिल नहीं पसीज सकता अब यह मक़बूल, वह पहिला मक़बूल नहीं रहा।

तन्नाज नं०२-और तन्नाज भी वह पहली तन्नाज नहीं रही।

मक़बूल-अच्छा तो बन्दगी।

तन्नाज नं० २-अच्छा तो बन्दगी।

फक्कड़-ओ मेरी ऑनरेरी बीबी, तुम्हें भी गुड मॉरनिङ्ग।

अजीब-ओ मेरे ऑनरेरी शौहर तुम्हें भी गुडनाइट।

मभूल-(तन्नाज से) तो मैं जाता हूँ।

तन्नाज नं० २-अच्छा तो जल्द यहाँ से दफान हुजीयेगा मैं आपका शुक्रिया अदा करूंगी।

मभूल-अच्छा फक्कड़ चल, कोई और माशूक ढूँढ।

तन्नाज नं० २-चल अजीब, कोई और आशीक फँसावें।

गाना। (गाना चारों का)

देखी शहजोरी तोरी ए बांके जवान।
पूरे नाई रे, हाँ रे नान बाई रे,
वाह रे वाह कसाई रे, मिली न लुगाई रे॥
ब्याहो धोबिनियाँ, जोगिनियाँ, भागो तुम दबा के जनाब।
खड़े कैसे हैं गोया नवाब॥
नहीं झगड़ा मचाव, नहीं टन्टा बढ़ाव,
ए ज़रा टोपी दुपट्टा सभाँलो जिया को कुढ़ाव ना॥
टट्टू को बढ़ाओ लट्टू न हो जाओ,
ये बेहयाई, दिखाओ न ज्यादा, तुम्हें कोई चाहे ना।
डटकर तनकर शेखियाँ मारना नाहीं हाँ॥पूरे०—

(मभूल फक्कड़ का एक तरफ, और दूसरी तरफ तन्नाज व अजीब का जाने के लिये बढ़ते हैं फिर मभूल ठहर कर फक्कड़ से कहते हैं)

मभूल-देख बुलाती है या नहीं।

फक्कड़-उ हूँ।

मभूल-(तन्नाज से) अच्छा जाते जाते मेरी एक बात और सुनती जावो। (पास जाकर) देखो, मैं फाका कशी करके मर

जाऊँगा, बगैर औरत के ही जिन्दा रहूँगा, मगर याद रखो, तुम्हारे दरवाजे पर न झाँकूँगा।

फक्कड़–(अजीब से) और मैं भी एक बन्दरिया पालकर गली गली डुगडुगी बजाऊँगा, मगर रीछ की बच्ची तेरी मुहब्बत के पट्टे में गला कभी न फँसाऊँगा।

मभूल–(तन्नाज से) अच्छा मेहरबानी फरमाकरके एक तसवीर जिस पर मैं सौ जान से फिदा था, उम्मीद है कि वापस लोगी। (तस्वीर देता है)

तन्नाज नं० २–और तुम्हारी भी एक चीज मेरे पास रह गई है, उम्मीद करती हूँ कि तुम भी वापस लोगे।

(अंगूठा उतार कर देती है)

मभूल–और सुनो, मेरी साल गिरह के रोज़ जो मुहब्बत के हाथों से तुमने टोपी पहनाई थी, वह भी वापस लेलो।

(टोपी देता है)

तन्नाज नं० २–और आपने भी यह ओढ़नी ईद के रोज़ जो अपने दामों से खरीद कर नजर की थी, ले लो।

(ओढ़नी देती है।)

फक्कड़—(अजीब से) और आव बीबी, हम तुम भी दाना बदलौवल कर लें। लो यह तुम ने जो अपने पुराने लहंगे का कोट बनाकर दिया था वह वापस लेलो। (कोट उतार कर दे देता है)

अजीब—और तुम ने अपनी पतलून की जो चोली बनवा कर दी थी यह वापस लो। (चोली उतार कर दे देती है)

मभूल—(तन्नाज़ से) तुमने यह हार मुझे दिया था, यह फाँसी भी वापस ले लो। (हार उतार कर वापस दे देता है)

तन्नाज़ नं० २—तुमने यह पाज़ेब मुझे लाकर जो दी थी, यह बेड़ी भी उतार लो।

मक्बूल—अच्छा सुनो ! एक पॉकेट भरके ओ तुम्हारी मुहब्बत के खत मेरे पास पड़े हैं, वह भी लेती आओ (फक्कड़ से) फक्कड़ ले यह कुंजी और खोल सन्दूकचा। (फक्कड़, सन्दूकचा खोल कर सब खत निकाल के देता है, मक्बूल पढ़ पढ़ कर अपने आगे रखता जाता है) (पहला खत पढ़ कर सुनाता है)

दीनो दुनिया से निकाला हो गया।
इश्क बाजी में दीवाला होगया॥

(खत पढ़ कर रख देता है, फिर दूसरा खत पढ़ कर सुनाता है)

अपनी हाँडी जब चढ़ाई इश्क ने।
गम का चटखारा मसाला हो गया॥

(दूसरा खत भी पढ़ कर रख देता है फिर तीसरा खत पढ़ कर सुनाता है)

एक गोरी गोरी सूरत के लिये।
अपना मुँह दुनिया में काला हो गया॥

तन्नाज नं० २—अजी इन खतों की तरह तुम्हारे भी तो खत मेरे पास मौजूद हैं। अजीब खोल बक्स, निकाल खत और मारदे इनके मुँह पर।

(अजीब बक्स में से खत निकाल कर देती तन्नाज पढ़ कर सुनाती है)

क्या से क्या दो दिन में हालत हो गई।
दिलका आ जाना मुसीबत हो गई॥

(पहिला खत पढ़ कर रख देती है, फिर दूसरा खत पढ़ती है)

छुट रहे हैं दिल कोई पुरशाँ नहीं।
आशकी देसी रियासत हो गई॥

(दूसरा खत भी पढ़ कर रख देती है फिर तीसरा खत पढ़ कर सुनाती है)

उस्तुरे से प्यार का सर मुँड गया।
इश्क में पूरी हजामत हो गई॥

फक्कड़--(मझूल से) हजामत होगई ! हज़रत, अब छः महीने की छुट्टी हो गई ?

मभूल-अबे ऊँट देखता क्या है, सब ख़त उठाकर फेंक दे, मुझे अब इनका एक भी कागज़ नहीं चाहिये।

तन्नाज़ नं०२-अजीब देखती क्या है, मुझे भी नहीं चाहिये, तूभी इनके कागज़ो को ठोकरों से उड़ादे। (दोनों का कागज़ों को ठोकरें मारना।)

फक्कड़-(अजीब से) अरे अरे यह तू क्या करती है ?

अजीब-और तू क्या करता है ?

फक्कड़-कम्बख़्त सामना करती है ?

अजीब-मूये बेहया तू भी आँखे मिलाता है।

(दोनों का एक दूसरे के ऊपर बिगड़ना)

गाना।

दोनों-तू बाँके जवानो की जन्टिल्मनों की,
कॉस मेटिक मोछों का बल न बिगाड़।
कौड़ी के चार तुझसे हज़ार,
ओफ् ओफ् ग्रेट इन्सलट।
मारूँगी ठोकर दूर हट चल, ले यह लेटर,
हाय रे जालिम न जिया जला।
जा जा रे जा जा, जा जा रे जा॥
आई वान्ट, आई डोन्ट बी गेट् अबे,
अबे तू अँगरेज़ी कब से सीखा।
चुप रहो काला मेडम बेहूदा॥

तन्नाज नं०२-बस, बस ! बेहूदा पन ज्यादा न करो।

मभूल-बेवकूफो तुम क्यों आपस में लड़े मरते हो।

फक्कड़-(रोकर) अजी हज़रत जो कुछ हुवा, यह सब आपही की बदौलत तो हुआ, मुफ़्त में रूस जापान की जंग करादी।

मक्भूल-आह तन्नाज, तन्नाज ! मैं तुझे ऐसा नहीं समझता था।

तन्नाज नं०२-मक्भूल, मक्भूल ! मैं भी तुम्हें इस कदर बेवफा नहीं जानता था।

फक्कड़-आह अजीब, अजीब ! मैं नहीं जानता था कि तू इतनी बे मुरव्वत है।

अजीब-मूये ! मैं कब जानती थी कि तू इतना बड़ा बेग़ैरत है।

मक्भूल-(रोकर) अच्छा आख़री सलाम।

तन्नाज नं० २- (रोकर) हमारी तरफ से भी आख़री सलाम।

फक्कड़-(रोकर) हाय ऐसी घमासान लड़ाई का कोई भी फैसला करने वाला नहीं।

अजीब-(रोकर) अल्ला रे हमारी टूटी हुई मुहब्बत का कोई भी जोडने वाला नहीं।

फक्कड़-(रोकर) ग़ैरों की लड़ाई में हमारा माशूक बिछड़ रहा है।

अजीब-(रोकर) मेरा बसा बसाया घर उजड़ रहा है।

मक्भूल-हाय हम हमेशा के लिये छूटे।

फक्कड़-घोड़े घोड़े लड़ें और मोची की ज़ीन टूटे।

मक्भूल-थे केक की फिक्र में सो रोटी भी गई।

तन्नाज-नं० २-चाही थी शै बड़ी सो छोटी भी गई।

अजीब-निकले थे खरी ढूँढने सो खोटी भी गई।

फक्कड़-पतलून के ताक में लंगोटी भी गई।

मक्बूल–चल कोई तदबीर निकाल।

फक्कड़–बस चले चलो ऐसी ही चाल।

अजीब–(तन्नाज से) बेगम साहबा, मुझसे तो अपने प्यारे का रोना देखा नहीं जाता।

फक्कड़–(मक्बूल से) अरे क़िब्ला कुछ तो बोलो, मैं तो हूँ मरा जाता।

मक्बूल–यार मेरे भी क़दम नहीं उठते हैं।

अजीब–या पीर शेख़ सद्दो। अगर अबकी मर्तबा अपने प्यारे से मिल जाऊँगी, तो सवा आने का एक नारियल और पौने ग्यारह आने का बकरा तुम्हारी भेंट चढाऊँगी।

फक्कड़–(मक्बूल से) जनाब, मैं तो अपनी प्यारी का हाथ पकड़ लेता हूँ।

अजीब–(तन्नाज से) बेगम साहबा, मैं तो अपने आशिक से मिलजाती हूँ।

(फक्कड़ व अजीब का मिल जाना, और मक्बूल व तन्नाज के मिलाने की कोशिश करना)

फक्कड़–(मक्बूल से) हजूर नख़रा न दिखाइये अब आप भी राजी हो जाईये।

अजीब–(तन्नाज से) बेगम साहबा, ज्यादा जिद अच्छी नहीं है, चलिये मान जाइये (मक्बूल व तन्नाज को जबर्दस्ती खींच कर गले मिला देते हैं)

चारों का— गाना।

खुदही लडें खुदही मनें अक्ल के क्या स्याने हैं।
हम शमअ हुस्न के हैं दोनों यह परवाने हैं॥
इश्कपनाह कहें रोगी दोनोंही दीवाने हैं।
हम तो बस जनूंख़ हैं और जनूखों के भी नाने हैं॥

प्यारे जानी, जानी का साथ, आव करो प्यार की बात।
करो जबर्दस्ती का प्यार, कि चाहे मिले वाहियात॥
प्यारे प्यार दो, हाँ जी ले लो,
तुम मुझे भी दो, लो जी तुम भी लो।
वाह वाह अच्छे माशूकों से मिल गये॥

(सबका गाते हुये चले जाना)

अंक दूसरा। सीन पाँचवाँ।

कैदखाना।

ताहिर-मेरे तमाम बदन के रगों में सुरुखरूई से रफ़्तार करने वाले खून मिस्ल दाने तसबीह के, क़दम क़दम पर बजा़ फ़ये वफ़ादारी का शुमार करता हुआ दौड़? सब्जए ख्वाबीदा की तरह आराम करनेवाले रोयें रोयें बेदार हो? और अपने ग़फ़लत के बाइस आक़ा की वफ़ादारी का सबक पढ़ना न छोड़।

(सैफ का मय खुशामदियों के आना)

सैफ़-क्यों, किलअदार ताहिर मिज़ाज कैसा है?

ताहिर-ज़ालिमों के दौर में जैसा होना चाहिये।

सैफ़-मेरे मुअज़्ज़ज़ दोस्तो पहिचानते हो यह कौन है?

खुदग़रज़-जी हाँ-हम अच्छी तरह जानते हैं। जिस बादशाह की जिन्दगी के पुराने दरख्त को हमने अपने तदबीरों की कुल्हाड़ियाँ मार मार कर गिरा दिया है, यह उसी बेग़ैरत ज़िद्दी दरख्त की एक वफ़ादार जड़ है।

सैफ़-हाँ, जिस मुरब्बये ज़मीन में इन कमज़ोर जड़ोंने अपने कदम मज़बूत गाड़ दिये थे, वह अब खुदवा दी जायगी।

और हर एक रग वो रेशे की वेखो बुनियाद मिट्टी समेत निकलवाकर खुश्क होने के लिये मैदान में फिकवा दीजायगी।

बुलहवस-ताहिर! आली मरतबा शहंशाह सैफ़ के हाथों से छुड़ाकर मज़हर को कहाँ फ़रार किया?

ताहिर-मुझे मालूम नहीं।

सैफ़-बिल फरज़ हो भी--

ताहिर-तुम मेरे ज़बान से नहीं सुन सकते।

खुदग़रज़--बतादे, बतादे, ताहिर हम तेरे दोस्त हैं?

ताहिर--अव्वल तो तुम मेरे दोस्त नहीं, अगर हो भी तो दोस्ती के परदे में गला काटने वाले दुश्मन हो।

खुदग़रज--(हँसकर) ओहो मिट्टी के ढेले और लोहे की दीवार से टक्कर?

बुलहवस--(सैफ से अलग) जनाब खरबूज़े के जब पेट फटने के दिन आते हैं, तो वह औंधा होकर छुरी पर गिरता है; मगर हुज़ूर अब आप यहाँ कुछ फरेबी चौसर बिछाइये। ताहिर वाकई बड़ा वफ़ादार है, उसको कुछ लालच दिखाकर काबू में लाइये।

सैफ़-हाँ, सोची तो खूब। ताहिर मैं तेरी हट धरमी को माफ़ करता हूँ और वफ़ादारी पर खुश होता हूँ, लेकिन दोस्त जो मर गये उसको भूलजा और जो फरार हो गये हैं उनका पता बता।

ताहिर--इसका नतीजा?

सैफ--नतीजा इतना अच्छा आयेगा कि तू खुश होजायगा। अगर मल्का आमरा और शाहज़ादे मज़हर का पता बता देगा तो तुझे अपने निस्फ़ सल्तनत का एक दूसरा बादशाह बना दूँगा।

ताहिर--अगर ऐसा है तो उनका पता बता देना मुझे

मंजूर है, मगर एक मुशकिल दर पेश है वह हल हो जाय तो।

सैफ़--मुशकिल ! व कौनसी मुशकिल ?

ताहिर--यही कि, जिस वक्त मैं मज़हर का पता बता दूँगा तो उस वक्त तीन बातें पैदा होंगी ! अव्वल तो बेईमानी दोयम. बेवफ़ाई, सेयम नमकहरामी, अब तुम यह बताओ वह कौन सी ताक़त है जो गये हुए ईमान को दुबारा ला सकती है ? वह कौन सी कोशिश है, जो बेवफाई के लगे हुए दाग़ को मिटा सकती है ? वह कौनसी दौलत है, जो नमकहराम को नमकहलाल बना सकती है ? खामोश क्यों होगया ? चुप क्यों रह गया ? याद रख ऐ शाहज़ादे ! जिस तरह एक बार इन्सान से रूह, ज़बान से बात, उम्र से जवानी, जाकर वापस नहीं आ सकती है, उसी तरह दुनिया में भी कोई जबरदस्त ताक़त नमकहराम को नमक हलाल, बेवफ़ा को बावफ़ा और बेईमान को ईमानदार नहीं बना सकती।

खुदगरज़--वफ़ादारी को क्या घोल कर पीना है। अपनी जान है तो सब कुछ, इस क़दर ज़ेहालत अच्छी नहीं ! अगर इन्सान की जान पर बने तो अपनी क़ीमती जिन्दगी के लिये ईमान छोड़ देना क्या यह अक्लमंदी नहीं है ?

ताहिर--ओ बदकारो, यह तुम जैसे बुज़दिल कम हिम्मत और नाकारों का काम है। ज़माना बदल गया तो क्या हुआ, क्या इन्सान को अपना फर्ज भी बदल देना चाहिये। ईमान को तर्क करके अगर हम सातो विलायत के बादशाह भी बन गये तो किसकाम के:--

रूह ने अन्सर को छोड़ा, जिस्म पुतला रहगया।
सल्ब ताक़त होगई हर अज़ो मुरदा रह गया ॥
खुश्क डाली रह गई. गुल नाशुगफ्ता रह गया।

ले उड़ी खुशबू हवा, जब फूल में क्या रह गया ॥
यांही गर जिस्म बशर ग़फ़लत से सोता रह गया।
चल दिया ईमान, और इन्सान रोता रह गया ॥

बुलहवस-पर यह तो मालूम हो ईमान है कहाँ।

खुदग़रज़-पैसों की थैली में।

सैफ़-और पैसे कहाँ हैं ?

बुलहवस-दग़ाबाज़ी और बेईमानी में।

सैफ़-शाबाश-आफ़रीं। वाकई बेईमानी और दग़ाबाज़ी से ऐश मिलता है। जो शख़्श ईमानदारी पर जान देता है वह हमेशा एक नाजिस कुत्ते की तरह जिन्दगी बसर करता है।

ताहिर-सच कहते हो। मगर दग़ाबाज़ी और बेईमानी से हासिल किया हुआ ऐश सिर्फ़ चन्दरोज के लिये लज्जत चखाता है, और बाद में मक्रो फ़रेब से हासिल की हुई दौलत न तो अजाब दोज़ख से रेहाई दिला सकती है, और न हफ्त अक-लीम की बादशाहत आई हुई मौत को रिशवत देकर टाल दे सकती है।

सैफ-ओ ज़बान दराज़, दानाई के पुतले! अपनी चर्ब ज़बानी को रोकले। ऐसा न हो कि वफ़ा शआरी और ईमानदारी खून के आँसू रोती हुई अदमआबाद को पहुँच जाये:—

बहर सूखे सदफ टूटे गोहर की आबरू जाये।
रहे ताकृत न ताक़त में, जो ख़ूँ में खू हो खू जाये ॥
वफ़ा फौरन मिटे ऐसी कि उड़ कर कू बकू जाये।
हवा हो जाय ज़िद सारी जो खंजर ता गुलू जाये ॥
न कह वह लफ़्ज़ जिसके जुर्म में दुनिया से तू जाये ॥

ताहिर-हरगिज़ नहीं !

दहन को चीर डालूँ फ़र्क़ अगर एक़रार में आये।
ज़बाँ को खैंचलूँ नग़ज़िम अगर गुफ्तार में आये॥
जला दूँ पांव गर सुस्ती दमे रफ्तार में आये।
दबा कर तोड़ दूँ जो ग़मसरे हुशियार में आये॥
जो मर जाऊँ वफ़ा की बू दरो दीवार से निकले।
सदा ए आफ़री मइय्यत पर बरगोबार से निकले॥

सैफ़-दुनिया में कैसे कैसे ज़िद्दी हठधर्म इन्सान हैं, जो ज़बान दराज़ी के बाइस हज़ारों मुसीबतों में मुबतिला हो जाते हैं। मगर बेवक़ूफ़ी और जेहालत करने से भी बाज़ नहीं आतेः-

अजब अहमक़ हैं खिंच जाता है जब नक़शा जहालत का।
देखा देते हैं, जर्फ़ अपना, ज़माने को रज़ालत का॥

ताहिर-जैसा मौक़ा वैसी ज़िद्द ! शरीफ़ों पर जब कमीनों की रिज़ालत ग़ालिब आजाया करती है तो उस वक्त शरीफ़ों की ज़िहालत और बेवक़ूफ़ी ही दानाई का काम किया करती हैः—

इसी बाइस हमेशा हर घड़ी रह रह कर ठनती है।
जो कहना हो वह कह डाले तो फ़ौरन बात बनती है॥

सैफ़-तू बेवक़ूफ़ है।

ताहिर-और तुम कमीने हो।

खुदग़रज़-हम शरीफ़ हैं।

ताहिर-तुम खुशामदी और रज़ील हो।

सैफ़-यह मेरे लायक़ दोस्त हैं।

ताहिर-तू इनका नालायक गुलाम है।

सैफ़-बस बस बेईमान तू जुनूनी है।

ताहिर-और तू अपने बाप का खूनी है।

सैफ़-हाँ, हाँ, खूनी और सरापा खूनी ! कमीने इन्सान, जानता नहीं तेरी ज़िन्दिगी कितनी साइत की मेहमान है।

ताहिर-जिन्दगी की खबर जितनी तुझको है उतनी ही मुझको है।

सैफ़-मेरे दोस्तो, कहो, कहो ! अब इस कमीने के लिये क्या सज़ा तजवीज की जाय ?

खुदग़रज़, बुलहवस-सजाये मौत।

ताहिर-हाँ सजाये मौतः-

मुझे भी देखना है रूह किस मंजिल पर जाती है।
चली जब तिश्नेलब तो घर कहाँ अपना बनाती है॥
वफ़ादारी वफादारों की जाने को तरसती है।
सुना है अर्श आज़म के तले इन सब की बस्ती है॥

सैफ़-बस्ती है, और ज़रूर बस्ती है ! अब मरना तो तू भी फ़ौरन जातही देख लेना। जिस क़ारे जहन्नुम में जाँफ़िज़ा सईद और हमीदा की रूह भटकती है, बादे मुर्दन उसी जगह तेरी भी रूह गश्त लगायेगी। जाओ फ़ौरन लकड़ियाँ लाकर इसके चौ तरफ चुनो और फिर आग लगा दो।

ताहिर-जला दो, जला दो ! तुम्हारे कब्ज़े में जिस कदर ज़ौरोसितम बाक़ी हैं, किसी के इमतेहान करने से बाज़ न आओः-

रवानी तबह की होवे, दिलों में मौज दरिया की।
न ठंडा जोश हो दिल का, हवा हो जाय सहरा की॥
चढ़ाओ और सैफ़ुल पर यह शमशीरे गज़ब नाकी।

जिगर हो सख्त पत्थर से न तंग आजाये बेबाकी ॥
करो सब सख्तियां मुझपर, हर एक ज़ालिम ज़माने की ।
मगर मुश्किल है मिलजाये निशानी कुछ ठिकाने की ॥

सैफ़-अफ़सोस ! एक मुर्दा लाश को इत्र की खुशबू संघाने के बदले अगर इत्र से नहला भी दो, तौभी उसका ज़िन्दा होना ग़ैरमुमकिन है ।

खुदग़रज-अजी साहेब, यह पता नहीं बताता है तो न बताये, मुर्गे ने अगर बांग नहीं दी तो क्या सुबह न होगी ।

सैफ़-अच्छा तो चुनो चुनो, चौतरफ लकड़ियाँ चुनो ! फिर इस पर तेल डालो, और पँजशाखे की तरह इसकी जिन्दगी के शजर को जलाकर ख़ाक कर डालोः-

आग बरसादो दरो दीवार से नापाक पर ।
और निगाहें क़हर की बरसें खसो खाशाक पर ॥
रहम मत करना ज़रा भी जालिमो बेबाक पर ।
वह उठें शोले कि पहुँचें आलमे अफलाक पर ॥
जुल्म वह करना कि एक से दूसरा बेलाग हो ।
नीचे ऊपर आगहो, और दायें बायें आगहो ॥

(सैफ का जाना दो तीन सिपाहियों का खुशामदियों के इशारे पर ताहिर के चौतरफ लकड़ियाँ चुनना) ।

बुलहवस-लकड़ियों का अम्बार तय्यार होगया । ताहिर अपने गुनाहों की माफ़ी माँगले, इतनी तुझे मुहलत है ।

ताहिर-गुनाहों की माफ़ी क्या ! तौबा करने की ज़रूरत तुम जैसे बदकारों को है । जिनकी ज़िन्दगी फ़रेब दग़ा और खुशामद के बायस सरापा गुनहगार हो चुकी है ।

खुदग़रज़- तू बेवकूफ़ है, अक़्लमन्द उसको कहते हैं जो

मौक़े पर अपने ऐश के लिये हर एक बदी का रास्ता अख्तियार करले:-

हाथ में तसबीह रखो खल्क ता दाना कहे।
पेंच के रस्ते चलो ता सर पै अम्मामा रहे॥
शक्ल तू ऐसी बना हर अहले ज़र इसमें फंसे।
मक्र करने को करो सीज़दः कि मक्कारी निभे॥

ताहिर-तुम अपना काम करो, नसीहत करने से बाज़ आओ:-

नेक नामी बहरे इन्सा बादे मुरदन चाहिये।
शमअ तुरबत हो न हो, पर नाम रौशन चाहिये॥

(चारो तरफ़ लकड़ियों में आग लग ना मल्का आमरा का देहातियों को लेकर कैदखाने की दीवार से सीढ़ी लगा कर उतरना, खुशामदियों पर फ़ैर करना, उनका भागना और मरना, आमरा का ताहिर को लेकर रवाना होना।

टेब्लो

ड्राप।

अंक तीसरा। सीन पहिला।

मैदाने जंग।

(मल्का आमरा का ताहिर और देहातियों की मदद से सैफ़ के मुकाबिले में जंग करते नज़र आना, सैफ़ की फौजों का शिकस्तखाना खुशामदियों का भागना सैफ़ के कदमों का उखड़ना)।

टेब्लो।

अंक तीसरा। सीन दूसरा।

जंगल, रास्ता।

खुदग़रज़-ओफ़ फतह फतह दुश्मनों की फ़तह।

सैफ़—आह, कहेर ज़ुल्म तूफ़ान ! खुदग़रज़ बुरा हुआ ?

बुलहवस—यह तो हमे भी मालूम है। अब क्या किया जाये ?

सैफ़—कोई तरकीब सोचो ?

खुदग़रज़—तरकीबों के दरवाजे चमकती हुई तलवारों ने बंद कर दिये है।

सैफ़—कुछ तो मज़मून लड़ाओ ?

बुलहवस--बस यहां से फ़रार हो जाओ ?

सैफ़--और तुम ?

खुदग़रज़--हम यहीं रहेंगे।

सैफ़--तो क्या तुम मुझसे बदल गये।

बुलहवस--जब ज़माना बदल गया, तब हमारे बदल जाने में क्या ताअज्जुब है।

सैफ़--आह, मेरे कुछ समझ में नहीं आता। कि तुम क्या कहना चाहते हो ?

खुदग़रज़--खुदा के लिये दिमाग़ न खाओ। अब यहाँ से जल्द दफान हो जाओ। कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारी वजह से हम भी गिरफ़्तार हो जायें। और नाहक़ क़ैदखाने की हवा खायें।

सैफ़—ओ बेईमानो ! तुम्हारी वजह से आज मुझ पर यह वक़्त आया और तुम तोता चश्मी दिखा रहे हो। वेदादी, बदनसीबी:—

अजब है आलम का रंग उलटा, कि रंग उलफत खराब देखा।
कदम कदम के थे जो के साथी, उन्हीं को देते जवाब देखा॥
सुरूर ऐशो निशात कैसे, बदल गये रंगही जहाँ के।
सुना न था कान से जो हमने, व आँख से इनकलाब देखा॥

खुदग़रज़—देखा क्या है अभी और देखोगे ! ज़मीन व आसमान की फिरती हुई चक्की के दोपाट हैं. अनक़रीब है कि पिस जाओगे।

सैफ़—मैं अपने हस्ती को पिसती हुई देखने के पेश्तर तुमको पीस दूँगा, खूँखारो मैं तुम्हें पैवंद जमीन बना दूँगा, और फिर ख़ाक में खाक होजाने वाली लाशों को ठोकरें मार मार कर-बाद मुरदन हवा के बगूलों में गरदिश दिलादूँगा।

बुलहवस—शाहज़ादे सैफ़! दीवाने न बनो, होश की दवा करो, इस वक्त तुम्हारे मुकाबले के लिये हम दो शख्सों का हमला काफ़ी है।

सैफ—क्या तुम मुझपर हमला करोगे ?

खुदग़रज़—जब तंग आजायेंगे, तो ज़रूर जंग मचायेंगे।

सैफ़—मैं तुम्हे कब्र में सुलादूँगा।

बुलहवस—हम इससे पेश्तर ही तुम्हे पायमाल करदेंगे।

सैफ़—ज़बान दराजीन करो।

खुदग़रज़—जाओ जाओ, हमारी ज़बानों से अपने करतूतों की कहानियाँ न सुनो।

सैफ़—हमने क्या किया ?

खुदग़रज़—तुमने वह किया है जो आजतक किसीने नहीं किया है।

सैफ़—तुम बकते हो जाहिल हो।

बुलहवस—हम तो सिर्फ जाहिल हैं मगर तुम आकिल होकर बापके क़ातिल हो।

सैफ़—और अब तुम्हारा भी बनूँगा !

(दोनों को गिराकर उनके सीने पर सवार होना और पिस्तौल दिखाना)।

खुदग़रज़—हैं, हैं, यह क्या करते हो,

सैफ़-क्या करता हूँ। उन दुश्मनों को मिटाता हूँ, जो शैतानों को भी सबक पढ़ाते हैं। जो शरीफ़ ख़ान्दानों को दामें फ़रेब में फंसाते हैं। कहो, कहो! कौन थे जिन्होंने मुझे क़िला तोड़ने की तरग़ीब दी थी ?. कौन थे जिन्हों ने मुझे बाप और भाई को कत्ल करने की सलाह बताई थी। तुम, तुम! तुम्ही ने, मेरे मिज़ाज़ को दोज़ख़ी बना डाला। तुम्हीं ने दुनियाँ भर में मुझे जलील कर डाला। आह—

गरदिशें कौनो मकाँ की इस अकेल सरमें हैं।
ताक़तें क़हरो ग़जब की आतिशी पत्थर में हैं॥
खून की जोलानियां के, शोर बहेरोबर में हैं।
दो छुपी नापाक रूहें, मेरी चश्मेतर में हैं॥
फ़ैसला है आज इस बारूद का दो दम की तरफ़।
छोड़ो दुनिया चले जाओ, अब जहन्नम की तरफ़॥

(दोनों को पिस्तौल से मार देना)।

(ताहिर अमरा और सिपाहियों का आना)

ताहिर-क़ातिल लईन! गिरफ़्तार कर लो इस खूनी को!

आमरा-काट लो सर, पामाल कर दो इसकी लाश को।

सैफ़-एक बहादुर को बहादुर हलाक़ करे यह उसके लिये बदनामी का दाग़ है।

ताहिर-जो भेड़िया अपनी ख़ूंख़ार फितरत के बायस अच्छे और बुरे पर हमला करने की तमीज़ न रखे, उसको देखते ही गोली का निशाना बना देना ही अक़्लमंदी की बात है।

सैफ़-नहीं, नहीं, ऐसा न करो! मैं उस निख़्वत को कि, जिसके बायस दुनिया में दग़ाबाज़ जल्लाद खूनी ठहरा, आज नदामत के साथ तुम्हारे क़दमों में वापस फेकता हूँ। सब

मिल कर लानत करो, और इस बुलहवस मग़रूर सरको गेंद की तरह ठोकरें मारो, मगर गुनाहों पर नादिम होनेके लिये दुनिया में चन्दरोज़ जीने दो।

आमरा—क्या कहा ! जीने दो? नहीं, नहीं, उस पत्थर को, जिसने अपने ताकत के घमंड पर हजारों के सर कुचले हैं, और उस सरापा खंजर को, जिसने अपनी धार से आदिलों के नामों निशान मिटाये हैं, आज बजाये तोड़ डालने और पीस डालने के जिन्दा छोड़ दें, कभी नहीं ?

सैफ़-मेरी बे रहमी का एवज़ अगर बेरहमीही से दोगे, तो फिर तुम अपने रहम, को किस रोज़ काम में लाओगे।

ताहिर-रहम, दुनियामें तुझ जैसे बदकार ज़ालिम के लिये पैदा नहीं हुआ है।

सैफ़-तो क्या ख़ोदा ने रहम को भी मुहर लगा कर, दुनिया में किसी खास आदमी के नाम से रवाना किया है ?

आमरा-रहेम की दुनिया ग़रीबो केलिये दारुल्ल अमान है।

सैफ़-और ख़ता का बदला शरीफ़ों के नज़दीक एहसान है।

ताहिर-ख़ता का जवाब सज़ा होता है ?

सैफ़-नहीं, नदामत का जवाब मेहर्बानी होता है।

आमरा-जिसकी जिन्दगी ज़लील हो जाती है, अगर फिर भी वह जीता है तो बेहया कहलाता है।

सैफ़-अगर उस बेहयाई का इस दर्ज़े ख़्याल किया जाये, तो इन्सान पर खुद कशी करके हराम मौत मरने का वक्त आता है।

ताहिर-तेरा यह कहना है कि गुनाहगार गुनाह कर के भी बेग़ैरती से ज़िन्दा रहे ?

सैफ़-बेशक रहे, और ज़ुरूर रहे, और जितनी जिन्दगी हो उसमें हमेशा अपने गुनाहों से तोबा करे। और खुदा से अपनी

मग़फ़िरत का ख़्वास्त गार रहे।

आमरा–लेकिन जिसका बाल बाल करोड़ों गुनाहों से बंधा हुआ है, क्या अज़ाबे दोज़ख़ से बरी करके खुदा उसको भी माफ़ करेगा।

सैफ़–करेगा और ज़ुरूर करेगा।

> बख़्शने वाला है वह नमरूद को शैतान को।
> माफ़ करनवाला है, शद्दाद को हामान को॥
> बद् से बद् भी है उसी के रहेम का उम्मीद वार।
> कहता है हर एक हमारी शर्म है रहमान को॥

आमरा–ख़ैर अब तू क्या चाहता है।

सैफ़–एहसान। दुनिया में जिस क़दर मज़लूम मासूम हैं सबकी मासूमियत की सिफारिश पहुँचाता हूँ। और तमाम नेक कारों के सदक़े में अपने गुनाहों की माफ़ी चाहता हूँ।

आमरा–ख़ैर, छोड़ दो! यह अगर अपने गुनाहों की तौबा के लिये दुनिया में जीना चाहता है तो जीने दो। खुदा इसपर रहेम करे। (सबका जाना)

सैफ़–आह:––

> किये अफ़आल हैं जितने उन्हें तौबा से बदलूँगा।
> है बाक़ी जिन्दगी जबतक, एबादत में गुज़ारूँगा॥
> मैं क़ातिल हूँ और मक़तूल की तुरबत पर जाऊँगा।
> बजाये फूल अपने आँसू रो रो कर चढाऊँगा॥
> ख़ता पर हो के नादिम, उस जगह मैं सरको फोडूँगा।
> न बख्शेगें पिदर जबतक, कभी दामन न छोडूँगा॥

अंक तीसरा। सीन चौथा।

क़ब्रिस्तान।

(सैफ़ का दीवानगी के हालत में दाखिल होना।)

सैफ़-ऐ पहाड़ो, दरख्तों, हवाओ, मैं तुम सबका गुनहगार हूँ। चरिन्दो परिन्दो मैं तुम सब का मुजरिम लायके दार हूँ। एक मिसकीन जलील भिकारी की तरह हर एक से माफ़ी माँग रहा हूँ। ज़मीन आसमान तुम दोनों के सामने सर झुका रहा हूँ। (शाह के क़ब्र को देखकर) अहा. याही मक़तूल बाप की कब्र है। कैसा नूर बरस रहा है, मगर लानती सैफ अपने आपको देख कि, तेरे चेहरे पर लानत की स्याही छा रही है। मैं कौन हूँ एक मुनसिफ आदिल का कातिल हूँ। यह फूलों में खिलनेवाली रूहें किनकी हैं, आह न बख्शो! न बख्शो! जाँफिज़ा, हमीदा और सईद की रूहो, तुम सब मुझे फ़ना करो। हाय न हँसो, मेरी हालते जार पर कोई न हँसो। मैं अपने गुनाहों की माफ़ी के लिये जिन्दा रहा हूँ। मैं अपने आमाल नामेके स्याह हरफ़ों को आँसुओं के पानी से धोकर साफ़ करना चाहता हूँ। तमाम कब्रिस्तान हँस रहा है। बाप का मजार ख़फ़ा हो रहा है। आह मैं जिन्दीगी हलाक कर दूँगा। सरको संगे कब्र से फोड़ फोड़ कर खुन से तर करूँगा बगैर माफ़ी लिये यहाँ से हरगिज़ न जाऊँगा। (सैफ़ का गिरकर सर फोड़ना। शाह के रूह का नजर आना) हैं सर हाथ में लिये हुये वह कौन खड़ा है। अहा अब्बाजान, अब्बाजन, रहेम रहेम, अपने ना ख़लफ़ खूबी बेटे पर रहेम रहेमः—

रूह-गोकि कुछ रुतबा नहीं है निगहते बरबाद का।
फिर भी आखिर बापको ग़म होता है औलाद का॥

जा तेरी बख़्शी खता, तू इस कदर जारी न कर।
ताज रख मज़हर के सर पर आलमे आबाद का॥
सैफ़-अहा ख़ता माफ़ कर दी रहेम दिल सुल्तान आफ़रीनः-
इससे भी और ज्यादा ख़ुदा के करीब हो।
फजले अमीम हो तुम्हें जन्नत नसीब हो॥
(रूह का गायब होना, सैफ का गत पर वापस आना)

अंक तीसरा। सीन पाँचवाँ।
दरबार ताजपोशी।

[गत का बजना मल्के आमरा शाहज़ादे मज़हर और किलेदार ताहिर का मय रईसों के रौनके मैफ़िल होना। एक तरफ़ सैफ़ का खड़े होना]

सैफ़-ए रईसानेवाला हशम ! आज का मुबारक रोज़ सिर्फ दो बातों के लिये कायम हुआ है।

ताहिर-क्या दो बात ?

सैफ़- एक तो सरापा मासूम मज़हर की ताज़ पोशी और दूसरे बदकार लानती सैफ़ की गुनाहों की माफ़ी।

ताहिर-बेशक ! नादिम आदमी के लिये माफ़ी सज़ावार है।

सैफ़-ताहिर मैं तुम्हारा गुनेहगार हूँ। जाँफ़िज़ा, हमीदा और सईद का कातिल, क़ाबिलेदार हूँ।

ताहिर-सैफ़, इस ज़शन् के मौके पर, उनका नाम लेकर मेरा दिल रंजीदा न करो।

सैफ़-प्यारी वाल्दा, मैं सख़्त नादिम हूँ और निहायत शरमिन्दा हूँ (रोता है)

आमरा-सैफ़ ! इस क़दर न रो; तेरे रोने से मेरा सीना भरा आता है, गम न कर, तेरे गुनाहों के माफ़ करने वाला वो खुदावन्दताला है। (ताहिर का मजहर को ताज़ पहिनाना)

ताहिर—

हफ्त किशवर में मुबारक नाम का सिक्का चले।
जब तलक खुरशीद है दुनिया में तू शाही करे॥
धाक हो शाहों में, जो दुश्मन हो वह दायम जले।
पर रेआया पर तेरे, अलताफ का साया रहे॥
जेहन दे तुझको खुदा इस गर्म जोशी के लिये।
हाजिरे खिदमत हैं उमरा, ताज पोशी के लिये॥

आमरा—सआदतमन्द ताज़ पोशी मुबारक।
ताहिर—अच्छी घड़ी की शादमानी मुबारक।
सैफ़—इबतदाये मुनसिफी की हुक्म रानी मुबारक।
सब—मुबारक, मुबारक, मुबारक।

गाना।

सहेलियाँ—जशन जमशेदी की घड़ियाँ देहर में हैं जा बजा
अर्श से ताफर्श है शोरे मुबारक गूंजता॥
मौसिम बदला इस गुलशन का।
मोती बरसे दिन रात॥
झूमत मय ख्वार नाचत हरवार।
तिरकिट ता तिरकिट ता तिरकिट ता थइया॥
छमछननन करो झनकार।
फितरत जिसकी बाला, आया शौकत वाला।
सूरत सीरत आला शाही जरार।
ऐसो दिलवर जानी, सितमगर प्यारा मनहर॥
हाकिम, जाय इसपर निसार।
खुशियाँ मनाओ मिल, घर घर सारे ज़रदार।

ड्राप।

बच्चों का

चरित्र गठन ।

विलायत में स्पेन्सर, रूसो, फ्रोबेल, लक, स्मायल, लबक, मेल, आदि बड़े बड़े प्रसिद्ध ग्रंथकार हो गये हैं। प्रत्येक पाश्चात्य निवासी इनकी योग्यता के आगे सिर झुकाता और इनके इशारों पर चलना अपना कर्त्तव्य समझता है। इन्हीं महात्माओं के ग्रंथों का मथन करके यह पुस्तक तैय्यार की गयी है। बच्चों के चरित्र बनाने में जिन जिन साधारण से साधारण त्रुटियों के कारण विषम फल उत्पन्न होने की सम्भावना रहती है, उनकी खूब आलोचना की गयी है और फिर वे उपाय जिनसे बच्चों के चरित्र बनाने में अनायास ही सहायता प्राप्त हो सकती है, ऐसी योग्यता और सरल भाषा में समझाये गये हैं कि पाठकों को देख कर दंग हो जाना पड़ेगा। यदि आप अपनी सन्तान को सुधारना चाहते हैं, यदि आप अपनी सन्तान से कुछ सुख पाने की कामना रखते हैं यदि आप को अपने जीवन मृत अवस्था में अपने नेत्रों को तृप्त करने और अपने को सौभाग्यवान समझने की कुछ भी लालसा है तो इस पुस्तक की एक प्रति लेकर अपने घर में रखिये, स्वयं पढिये, वृद्धों को पढ़ाइये, भावी माताओं और पिताओं को पढ़ाइये और उस में के वर्णित नियमों से बच्चों का पालन कीजिए। फिर देखिए, गृहसुखों से परिपूर्ण रहता है या नहीं? मूल्य केवल ॥)

नया ढंग !!

बहार थियेटर।

दूसरा भाग।

लीजिये पाठक ! यह वही पुस्तक है जिसके पास रहने से थियेटर देखने जाने पर भी उसकी बहार से वं रहते थे। इसके लिये थियेटर में बैठे रहने पर भी इधर गर्दन उठाने का दुःख और पुस्तक न मिलने से निराश जाते थे। आज यह वही पुस्तक सेवा में अर्पित है, कि लिये आपलोग बहुत पैसे कम्पनी वालों को दे चुके और बराबर देते जा रहे हैं। वह भी एक एक के तीन सो भी खुशी से नहीं मजबूरी से। बहार थियेटर प्रसिद्ध २ खेलों के गायनों का संग्रह है जिनकी किताब कम्पनी वालों से तीन तीन आनेपर खरीदते हैं। उन कि का मूल्य कितना अधिक होता है, इसपर यदि आप क विचार किये होंगे या करेंगे, तो केवल शोक से हाथ पड़ेगा। इतना होने पर भी आपको कम्पनी से गाय किताबें लेनीही पड़ती हैं। कारण, गायन की पुस्तक प रहने से गायन का पूरा पूरा लुत्फ नहीं आता और अड़ङ्गा रहता है। इस लिये हमने उन्हीं मशहूर मशहूर नियों के प्रसिद्ध २ खेलों के सम्पूर्ण गायनों का संग्रह, र निकालना निश्चय किया है। जिनकी कि आजकल हिन्दुस्तान में धूम मचीहुई है, विशेष प्रसंशा व्यर्थ है, कंगन को आरसी क्या। मूल्य केवल ।=)।

पताः—मैनेजर उपन्यास बहार

आफिस काशी, बन